NOT TO BE ISSUED

ICHR

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्

Annual Report for the years
1981-82
1984-85 were
not printed.

वार्षिक विवरण

1972-73

अध्याय १

परिषद की स्थापना

१.०१ ऐतिहासिक अनुसंधान को सही दिशा देने और इतिहास के वस्तु-निष्ठ वैज्ञानिक लेखन को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने के महत्व को स्वीकार करते हुए भारत सरकार ने समिति पंजीकरण अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकृत एक स्वायत्त निकाय के रूप में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् की स्थापना करने का निर्णय लिया। इस परिषद् का विधिवत् गठन किया गया और २७ मार्च, १९७२ को भारत के उप-राष्ट्रपति डा. गोपाल स्वरूप पाठक ने नई दिल्ली में इसका उद्घाटन किया।

परिषद् के उद्देश्य और लक्ष्य

१.०२ परिषद् के उद्देश्य और लक्ष्य इस प्रकार हैं:

—इतिहासकारों को एक दूसरे के पास लाना और उनमें परस्पर विचार विनिमय के लिए एक मंच प्रदान करना,

—इतिहास की वस्तुनिष्ठ और राष्ट्रीय प्रस्तुती तथा निर्वचन को एक राष्ट्रीय दिशा देना;

—जिन क्षेत्रों की ओर अब तक पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है, उन्हें विशेष महत्व देते हुए इतिहास में अनुसंधान को बढ़ावा, गति देना और समन्वय करना;

—भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अनुसंधानपरक कार्यों के समन्वित और सन्तुलित वितरण को बढ़ावा देना; और

—ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए सभी सम्बद्ध पक्षों का सहयोग और मान्यता प्राप्त करना और आवश्यक प्रचार-प्रसार करना और उसके परिणामों का उपयोग करना।

१.०३ इन उद्देश्यों को कार्यान्वित करते समय, परिषद् इतिहास को उसके व्यापक अर्थ में लेगी, जिसमें कला, साहित्य और दर्शन तथा पुरातत्व, मुद्राशास्त्र, पुरालेखा-विद्या जैसे सम्बद्ध विषय और पांडुलिपियों का ऐतिहासिक अध्ययन शामिल है।

वह विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इतिहास के अध्ययन को भी प्रोत्साहन देगी और सामान्यतः वह ठोस ऐतिहासिक अभिनति और अंतर्वस्तु वाले किसी भी विषय के अध्ययन को बढ़ावा देगी ।

१.०४ संघ के ज्ञापन-पत्र में परिषद् के कार्य निम्न प्रकार बताए गए हैं :

(क) इतिहास के वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक लेखन को इस प्रकार बढ़ावा देना कि उसमें देश की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक धरोहर का ज्ञात महत्व अन्तर्निविष्ट हो सके;

(ख) ऐतिहासिक अनुसंधान की प्रगति की समय-समय पर समीक्षा करना और उन उपेक्षित अथवा नये क्षेत्रों को बताना, जहाँ विशेष रूप से अनुसंधान को बढ़ावा देने की जरूरत है;

(ग) *ऐतिहासिक अनुसंधान के कार्यक्रम प्रायोजित करना और ऐतिहासिक* अनुसंधान के काम में लगी हुई संस्थाओं और संगठनों की सहायता करना;

(घ) व्यक्तियों अथवा संस्थाओं द्वारा ऐतिहासिक अनुसंधान के कार्यक्रम तैयार कराने के लिए तकनीकी सहायता देना और अनुसंधान की कार्यप्रणाली में प्रशिक्षण के लिए संस्थागत व्यवस्थाओं को सहयोग देना;

(ङ) ऐतिहासिक अनुसंधान संबंधी प्रलेखन और संदर्भ सेवा विषयक केन्द्रों का विकास करना और उनकी सहायता करना;

(च) इतिहास में अनुसंधानरत व्यक्तियों और उनके विशिष्ट क्षेत्रों के राष्ट्रीय रजिस्टर का रखरखाव करना;

(छ) निजी अभिरक्षा में अथवा आवश्यक सुविधाओं से वंचित संस्थाओं में पड़ी हुई ऐतिहासिक सामग्री का पता लगाने, उसका सर्वेक्षण करने, उन्हें सूचीबद्ध करने और सुरक्षित रखने के लिए राजकीय अभिलेखागारों और क्षेत्रीय अभिलेख सर्वेक्षण समितियों के सहयोग से उपाय तजबीज करना;

(ज) समय-समय पर उन क्षेत्रों और विषयों को बताना, जिनके विषय में ऐतिहासिक अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जाना है, और ऐतिहासिक अनुसंधान के उपेक्षित अथवा नये-नये क्षेत्रों, जैसे आर्थिक और सामाजिक इतिहास, ऐतिहासिक भूगोल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का इतिहास, कला का इतिहास आदि, में अनुसंधान के विकास के लिए विशेष उपाय करना;

(झ) ऐतिहासिक अनुसंधान के क्षेत्र में अनुसंधान संबंधी कार्यकलापों का समन्वय करना;

(ञ) भारत और विदेश में ऐतिहासिक अनुसंधान से संबंधित विचारों और जानकारी के सूचना प्रसार केन्द्र के रूप में काम करना;

(ट) ऐतिहासिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने और उसका उपयोग करने के लिए सेमिनार, वर्कशाप और सम्मेलनों का आयोजन करना, उन्हें प्रायोजित करना और उनकी सहायता करना;

(ठ) उच्च स्तर के ऐतिहासिक अनुसंधान के प्रकाशनों को प्रोत्साहित करना और इस प्रकार के अनुसंधान के प्रति समर्पित डाइजेस्टों, पत्रिकाओं और पत्रों के प्रकाशन का काम करना;

(ड) ऐसे लोकप्रिय साहित्य के लेखन को प्रोत्साहित करना जो भारत की सांस्कृतिक धरोहर की वस्तुनिष्ठ समझ का विकास करेगा;

(ढ) ऐसी स्रोत सामग्री का संकलन और प्रकाशन अपने हाथ में लेना जिससे ऐतिहासिक अनुसंधान और ऐतिहासिक लेखन के काम में सुविधा हो;

(ण) ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए छात्रवृत्तियाँ और अध्येतावृत्तियाँ स्थापित करना और उनका संचालन करना;

(त) प्रतिभाशाली युवा इतिहासिकारों के एक निकाय का विकास करना और अनुसंधान में रुचि रखने वाली प्रतिभाओं का पता लगाना और उन्हें प्रोत्साहित करना, विश्वविद्यालयों और अन्य अनुसंधान संगठनों में काम कर रहे युवा अध्यापकों को प्रोत्साहन देना;

(थ) भारत सरकार को ऐतिहासिक अनुसंधान और इतिहास कार्य प्रणाली में प्रशिक्षण से संबंधित ऐसे सभी मामलों में सलाह देना, जो कि समय समय पर उसे भेजे जाएँ। इसमें विदेशी शिक्षा संस्थाओं के साथ ऐतिहासिक अनुसंधान में सहयोगी व्यवस्थाएँ और प्रशिक्षण की सुविधाएँ भी शामिल हैं;

(द) अपने उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए, अपने कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए और परस्पर स्वीकार की गई शर्तों पर धर्मस्व, सहायक अनुदान, दान अथवा उपहार प्राप्त करने और स्वीकार करने के लिए भारत सरकार, राज्य सरकारों और अन्य सरकारी अथवा निजी संगठनों अथवा व्यक्तियों के साथ व्यवस्था करना;

(घ) ऐतिहासिक अनुसंधान को बढ़ावा देने और देश में उसका उपयोग करने के लिए सामान्यतः ऐसे सभी उपाय बरतना, जो समय-समय पर जरूरी हों ।

१.०५ परिषद् में इतिहासकारों और पदेन सदस्यों सहित २७ सदस्य हैं । दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर आर. एस. शर्मा परिषद् के अध्यक्ष हैं । सदस्यों की सूची परिशिष्ट-१ में देखी जा सकती है ।

१.०६ परिषद् के प्रथम सदस्य-सचिव की नियुक्ति भारत सरकार करेगी । परिषद् की पहली बैठक में इस पद के कार्यों का निर्वहन भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार के निदेशक डा. एस. एन. प्रसाद ने किया । अप्रैल, १९७२ से श्रीमती एस. दुराईस्वामी, उप-शिक्षा सलाहकार, शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय परिषद् के सचिव के कार्य कर रही हैं ।

प्रशासनिक और वित्तीय संगठन

स्वायत्तता

१.०७ परिषद् के विशेष स्वरूप को ध्यान में रखते हुए, जैसा कि उसके कार्यों और क्रियाकलापों के क्षेत्र से ज्ञात होता है, यह जरूरी है कि उसकी स्वायत्ता को बनाये रखा जाए । इसके अन्तर्गत उसे अनुचित राजनीतिक अथवा नौकरशाही के दबाव से मुक्त रखना और साथ ही उन पारस्परिक विरोधों से अलगाव रखना शामिल हैं जो कि स्वयं शैक्षिक समाज के अन्दर पैदा हो सकते हैं । परिषद की स्वायत्ता मुख्यतः उसके सदस्यों और कर्मचारी-वर्ग की योग्यता और स्वभाव पर तथा उस संबंध पर निर्भर करेगी जो कि वह व्यापक शिक्षित समाज के साथ विकसित करेगी ।

परिषद् की समितियाँ

१.०८ परिषद् के कार्यों के निर्वहन में दो समितियाँ उसकी सहायता कर रही हैं:

(i) प्रशासन समिति, और (ii) अनुसंधान परियोजना समिति (अ.प.सं.)

प्रशासन समिति

१.०९ प्रशासन समिति नियमों और विनियमों तथा आदेशों के अधीन परिषद् के प्रशासनिक और वित्त मामलों की देखभाल करती हैं । उसमें निम्नलिखित पदाधिकारी होते हैं :

(क) अध्यक्ष

(ख) वित्तीय सलाहकार

(ग) वार्षिक आम सभा में परिषद् द्वारा नियुक्त सदस्य, जिनकी संख्या पाँच से कम अथवा सात से ज्यादा न हों, और

(घ) सदस्य-सचिव

इस समिति के सदस्यों की सूची परिशिष्ट-२ में देखी जा सकती है।

अनुसंधान परियोजना समिति

१.१० परिषद् की अनुसंधान परियोजना समिति अनुसंधान परियोजनाओं को दिए जाने वाले सहायक अनुदानों और परिषद् के सामने पेश किए गए वित्तीय सहायता के अन्य प्रस्तावों की, परिषद् के नियमों और विनियमों तथा आदेशों के अधीन, छानबीन करके मंजूरी प्रदान करती है। इसमें निम्नलिखित व्यक्ति होते हैं :

(क) अध्यक्ष

(ख) वार्षिक आम सभा में परिषद् द्वारा नियुक्त परिषद् के तीन इतिहास-कार सदस्य,

(ग) परीक्षाधीन अध्ययन क्षेत्र के अनुसार व्यक्तिगत बैठकों के लिए अध्यक्ष द्वारा मनोनीत तीन विशेषज्ञ, जिन्हें सहयोजित किया जाएगा; और

(घ) सदस्य-सचिव

२७ मार्च, १९७२ को हुई अपनी पहली बैठक में परिषद् द्वारा नियुक्त किए गए इस समिति के सदस्यों की सूची परिशिष्ट-२ में देखी जा सकती है।

१.११ इन दो समितियों के अलावा, परिषद् को उसके समान्य कार्यकलापों के संचालन में सलाह देने और शिक्षा तथा समाज-कल्याण मंत्रालय द्वारा उसे स्थांतरित की गई कुछ परियोजनाओं की देखभाल करने के लिए निम्नलिखित समितियाँ स्थापित की गई हैं :

(i) विनियम समिति
(ii) सर्वेक्षण समिति
(iii) पुस्तकालय तथा प्रलेखन समिति
(iv) स्रोत सामग्री की तैयारी से संबंधित समितियाँ, प्राचीन, मध्य कालीन और आधुनिक
(v) भारतीय संस्कृति पर एक स्रोत पुस्तक तैयार करने से संबंधित योजना ग्रुप

(vi) पुनर्मुद्रण समितियाँ
(vii) मध्य एशियाई अध्ययन समिति
(viii) द्वितीय विश्व-युद्ध के इतिहास से संबंधित राष्ट्रीय सलाहकार समिति
(ix) द्वितीय विश्व-युद्ध के इतिहास संबंधी अध्ययन समिति
(x) अनुवाद कार्यक्रम के लिए योजना समिति
(xi) पाँचवीं पंचवर्षीय योजना से संबंधित कार्यकारी ग्रुप

विभिन्न प्रायोजनों के लिए परिषद् द्वारा स्थापित समितियों, कार्यकारी ग्रुपों आदि की रचना परिशिष्ट-२ में देखी जा सकती है।

अध्याय २

प्रमुख कार्यक्रम

योजना और कार्यक्रम

२.०१ समिति के सामने सबसे पहला काम अपने कार्यक्रमों का स्थूल ढाँचा स्थापित और निर्धारित करने का था, ताकि वह ठोस आधारों पर देश में ऐतिहासिक अनुसंधान को बढ़ावा दे सके, उसकी मात्रा का विस्तार कर सके, उसकी कोटि सुधार सके और इतिहास के अध्यापन में उसके उपयोग को सुकर बना सके।

ऐतिहासिक अनुसंधान सर्वेक्षण

२.०२ परिषद् ने क्षेत्र का सर्वेक्षण करके और गत २५ वर्षों में इतिहास में अब तक किए गए काम की समीक्षा करके अनुसंधान प्रोत्साहन का एक दीर्घ-अवधि कार्यक्रम तैयार करने और यह पता लगाने का निश्चय किया है कि इस काम ने हमारी जानकारी में कहाँ तक वृद्धि की है और किस दिशा में ऐतिहासिक जानकारी शैली, अन्तर्वस्तु, सन्दर्भ, संभावना आदि की दृष्टि से बदलती जा रही है। जो प्रवृत्तियाँ खत्म होती जा रही हैं और जो नई प्रवृत्तियाँ उभर कर सामने आ रही हैं उनका पता लगाने और ऐतिहासिक जानकारी में आए उन अंतरालों का पता लगाने के लिए जिनकी ओर ध्यान देने की जरूरत है तथा स्थूल प्रश्न, परिकल्पनाएँ सुझाने के लिए यह सर्वेक्षण जरूरी है, ताकि हमारी अनुसंधान परियोजनाओं में प्राथमिकताएँ निश्चित करते समय और स्रोत सामग्री की तैयारी और उसके प्रकाशन की योजना बनाते समय इन सभी पर विचार किया जा सके।

सर्वेक्षण का आयोजन और विषयों का एकीकरण

२.०३ इस विषय पर परिषद् को सलाह देने के लिए स्थापित सर्वेक्षण समिति की २९ जुलाई १९७२ को बैठक हुई और उसने सिफारिश की कि इस कार्यक्रम पर दो चरणों में कार्य किया जाए।

(क) प्रथम चरण

(i) ऐतिहासिक भूगोल

(ii) भक्ति आन्दोलन

(iii) बौद्धमत

(iv) १८वीं और १९वीं शताब्दियों के समाज सुधार आन्दोलन

(v) भारत में उदारवादी विचारधारा

(vi) गाँधीवाद और गाँधीवादी विचारधारा

(vii) भारत में समाजवादी और साम्यवादी विचारधारा

(viii) प्रशासन का इतिहास

—मौर्य से लेकर गुप्त-काल तक प्रशासन का इतिहास

—दिल्ली सल्तनत के अधीन प्रशासन

—मुगल प्रशासन

—नायकों और पोलीगारों तक विजयनगर के प्रशासन का इतिहास

—दक्षिण भारत विशेषतया चोला राज्यतंत्र में प्रशासन

(ix) पूर्व-आधुनिक शिल्पों का इतिहास

(x) रेलवे सहित परिवहन और संचार-व्यवस्था का इतिहास

(xi) भारतीय ग्रामीण समुदाय

(xii) ब्रिटिश भारत में पट्टेदारी

(xiii) युद्ध का इतिहास

—प्राचीनकाल

—मध्यकाल—१८वीं शताब्दी तक

—आधुनिक काल—१९१४ तक

(xiv) १९५७ का विद्रोह

(xv) राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास

(xvi) प्रौद्योगिकी का इतिहास

(xvii) ठोस पुरातत्व अन्तर्वस्तु और अभिविन्यास वाले निर्माण-कार्य

(xviii) भारतीय विचारधारा का इतिहास

(ख) द्वितीय चरण

(i) पूर्व-आधुनिक कालों में राजनीतिक विचारों का इतिहास, जिसमें राज्य विषयक अवधारणा भी शामिल है

(ii) संवैधानिक इतिहास

(iii) धार्मिक इतिहास, जिसमें बौद्धमत और भक्ति आन्दोलन शामिल नहीं हैं

(iv) भाषा और साहित्य का इतिहास

(v) क्षेत्रीय इतिहास

(vi) बाहरी दुनिया के साथ भारत के संबंध जिनमें कूटनीति का इतिहास भी शामिल है

(vii) राजनीतिक और राजवंशगत इतिहास

(viii) ऐतिहासिक भूगोल

२.०४ सत्ताइस सर्वेक्षणों का काम हाथ में लिया गया है। प्रत्येक परियोजना के लिए मंजूरी की गई ३,०००.०० रु० की रकम में से ५०० ०० रु०–१०००.०० रु० तक के बीच की पहली किस्त १७ सर्वेक्षणों के लिए दी जा चुकी है। यह आशा की जाती है कि अगले वित्त वर्ष के अन्त तक सर्वेक्षणों का काम पूरा हो जाएगा। इन सर्वेक्षण रिपोर्टों से परिषद् को पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के पहले वर्ष की शुरुआत में ही अपनी नीतियाँ तैयार करने में मदद मिलेगी।

अनुवाद कार्यक्रम

२.०५ विद्यार्थियों, अध्यापकों, अनुसंधान-छात्रों आदि के लिए भिन्न-भिन्न भारतीय भाषाओं में इतिहास संबंधी पर्याप्त सामग्री प्रदान करने के लिए परिषद् ने पिछले पच्चीस वर्षों में लिखी गई भारतीय इतिहास की चुनिंदा किताबों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद कराने का एक कार्यक्रम शुरू किया है।

२.०६ इस कार्यक्रम को लागू करने के लिए एक योजना समिति का गठन किया गया है, जिसमें निम्नलिखित सदस्य हैं :

१. प्रोफेसर आर. एस. शर्मा, अध्यक्ष
२. प्रोफेसर सतीशचन्द्र
३. प्रोफेसर वरुण डे
४. प्रोफेसर एस. गोपाल
५. प्रोफेसर जे. एस. ग्रेवाल
६. प्रोफेसर ए. आर. कुलकर्णी
७. प्रोफेसर (कुमारी) रोमिला थापर
८. सचिव, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्

२.०७ किताबों का चुनाव निम्नलिखित सिद्धान्तों को लागू करने के बाद किया गया, अर्थात् (i) इतिहासकारों ने किस सीमा तक आधुनिक ऐतिहासिक कार्य-प्रणाली का इस्तेमाल किया है ? और (ii) काम किस सीमा तक अद्यतन है ?

२.०८ अलग-अलग क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद कराने के लिए पहले चरण में कुल मिलाकर ९५ किताबों का चुनाव किया गया, परिषद् के सदस्यों, विश्व-

विद्यालय विभागों और विख्यात इतिहासकारों की ओर से लगभग ५५० अनुवादकों के नाम आए। उनमें से लगभग ४०० को यह काम सौंपा गया।

२.०९ परिषद् ने उन अनुवादकों की तुलना में, जिन्हें कि यह काम सौंपा गया है, निम्नलिखित कार्यविधि अपनाई है :

(क) अनुवादक को निदेश दिया जाता है कि वह अनूदित सामग्री के लगभग दस पृष्ठों को दो प्रतियाँ परिषद् को भेजे, जिसमें से एक प्रति राय देने के लिए समीक्षक के पास भेजी जाती है;

(ख) अगर नमूने का अनुवाद संतोषजनक होता है, तो अनुवादक से कहा जाता है कि वह अनुवाद का काम करता रहे;

(ग) अंतिम अनूदित सामग्री छानबीन के लिए एक समीक्षक के पास भेजी जाती है, और प्रेस में भेजने से पहले, अगर जरूरी हो तो, उसमें संशोधन किया जाता है।

२.१० लेखकों/प्रकाशकों से अनुवाद के अधिकार प्राप्त करने के लिए परिषद् आवश्यक कदम उठा रही है। परिषद् अब तक ३५ किताबों के विषय में लेखकों/प्रकाशकों से अनुवाद के अधिकार प्राप्त कर चुकी है।

२.११ यह भी निर्णय किया गया है कि निम्नलिखित कार्यों में मदद करने के लिए एक इतिहासकार के प्रभार के अन्तर्गत स्थानीय एकक स्थापित किए जाएँ :

(क) उपयुक्त अनुवादकों का पता लगाने के लिए,

(ख) उपयुक्त पुनरीक्षकों/समीक्षकों का पता लगाने के लिए, और

(ग) संबंधित भाषाओं में शैली-मार्गदर्शिकाएँ (स्टाइल-गाइड्स) निकालने के लिए

परिषद् ने समग्र व्यय की व्यवस्था करने के लिए स्थानीय एककों को आवश्यक धन दिया।

२.१२ अनुवाद कार्यक्रम पर होने वाले व्यय की व्यवस्था करने के लिए परिषद् को वर्ष १९७२-७३ के दौरान शिक्षा और समाज-कल्याण मंत्रालय से उनकी 'विश्व-विद्यालय छात्रों के लिए मूल पुस्तकों का प्रकाशन' योजना के अंतर्गत ७.५० रु० लाख का अनुदान प्राप्त हुआ।

२.१३ ऐसी संभावना है कि रिपोर्ट वर्ष के दौरान हाथ में लिया गया ९५ किताबों के अनुवाद का काम १९७४-७५ के अन्त तक पूरा हो जाएगा।

स्रोत सामग्री

२.१४ विश्वविद्यालयों और कालेजों में इतिहास के अध्यापन को एक ठोस स्रोत अभिविन्यास देने और अनुसंधान -छात्रों, अध्यापकों आदि की जरूरतों को

पूरा करने के लिए पर्याप्त प्रकाशित स्रोत सामग्री प्रदान करने की दृष्टि से परिषद् ने प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारतीय इतिहास से स्रोत-सामग्री तैयार करने के लिए तीन समितियों की स्थापना की । यह परिषद् का एक प्रमुख कार्यक्रम है और इसे कार्यान्वित करने के लिए अथक प्रयत्न किए जा रहे हैं। परिषद् ने स्रोत सामग्री के संकलन, संपादन और व्याख्या का एक सुविस्तृत कार्यक्रम तैयार किया है ।

स्रोत सामग्री का तैयार किया जाना

प्राचीन भारत का इतिहास

२.१५ इस प्रयोजन के लिए गठित की गई समिति ने २२ अक्तूबर, १९७२ को अपनी पहली बैठक का आयोजन किया और उसने पहली अवस्था में निम्नलिखित क्षेत्रों के संबंध में स्रोत सामग्री तैयार करने की सिफारिश की :

(क) स्नातकोत्तर छात्रों के लिए पाठ्यक्रमों का चयन
(ख) भारत के शिलालेख
(ग) भारतीय पुरातत्व कोश
(घ) दुर्लभ और अप्राप्य सामग्री का पुनर्मुद्रण
(ङ) शिलालेखों में प्रयुक्त शब्दावली
(च) स्रोतों के विषय-वार प्रकाशन
(छ) दक्षिण-पूर्व एशिया से संबंधित स्रोतों का तैयार किया जाना

स्नातकोत्तर छात्रों के लिए स्रोतों का चयन (दो खंडों में)

२.१६ प्राचीन भारत के इतिहास से संबंधित ऐसे स्रोतों के चयन की सिफारिश करने के लिए, जो कि स्नातकोत्तर छात्रों के लिए उपयोगी होंगे, जो उप-समिति बनाई गई, उसमें निम्नलिखित सदस्य हैं :

१. प्रोफेर आर. एस. शर्मा, अध्यक्ष
२. प्रोफेसर लल्लन जी गोपाल
३. डा. डी एन. झा
४. डा. एम. जी. एस. नारायणन
५. डा. ए. एम. शास्त्री
६. प्रोफेसर (कुमारी) रोमिला थापर
७. सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्

२.१७ इस उप-समिति की ८ जनवरी, १९७३ को बैठक हुई और उसने सिफारिश की कि प्रथम खण्ड में ३२० ईस्वी सन् तक की अवधि को और दूसरे खण्ड में ३२०

ईस्वी सन् से १४०० ईस्वी सन् तक की अवधि को लिया जाए। दोनों खण्डों की योजना और उन इतिहासकारों के नाम नीचे दिए गए हैं, जिन्होंने उनके अध्याय लिखना स्वीकार कर लिया है :

खंड १ (३२० इस्वी सन् तक)

१. भूमिका	प्रोफेसर लल्लन जी गोपाल बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
२. प्रागितिहास और आद्य-इतिहास	डा. दिलीप चक्रवर्ती कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता
३. वैदिक काल	डा. एस. ए. डाँगे संस्कृत विभाग बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई
४. महाजनपद काल	प्रोफेसर एस. डी. सिंह, लखनऊ
५. मौर्य काल	प्रोफेसर (कुमारी) रोमिला थापर अध्यक्ष सेंटर फार हिस्टोरिकल स्ट्डीज जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली
६. उत्तर-मौर्य काल	
(क) राजनीतिक इतिहास	प्रोफेसर बी. एन. मुखर्जी शिव निवास, ५६, जतीन दास रोड कलकत्ता–२९
(ख) इतर-राजनीतिक इतिहास	डा. डी. एन. झा पटना विश्वविद्यालय, पटना

खंड २ (ईस्वी सन् ३२०-१४००)

७. गुप्ता राजा और उसके उत्तराधिकारी	डा. चम्पक लक्ष्मी जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली
(क) दक्षिण भारत का राजनीतिक इतिहास	प्रोफेसर बी. आर. गोपाल कालीकट विश्वविद्यालय कालीकट

(ख)	दक्षिण-भारत का इतर-राजनीतिक इतिहास	डा. एम. जी. एस. नारायणन कालीकट विश्वविद्यालय कालीकट
(ग)	उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास	डा. बी. पी. मजूमदार बी. एन. कालेज पटना
(घ)	उत्तर भारत का इतर-राजनीतिक इतिहास	डा. बी. डी. चट्टोपाध्याय जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय. नई दिल्ली

प्रोफेसर आर. एस. शर्मा ने इन दोनों खण्डों का प्रधान सम्पादक बनना स्वीकार कर लिया है ।

२.१८ प्रत्येक खण्ड में सामान्य परिचय के अतिरिक्त खण्ड-परिचय और जहाँ जरूरी होगा, वहाँ स्रोत-वार परिचय दिया जाएगा । इससे पाठक स्रोतों का उनके उचित ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कर सकेंगे । अध्याय लिखने वाले इतिहासकारों के इस्तेमाल के लिए विस्तृत मार्गदर्शक सिद्धान्त तैयार किए गए हैं ।

भारत के शिलालेख

२.१९ परिषद् ने ईसा पश्चात् छठी शताब्दी से १५वीं शताब्दी तक के भारतीय शिला-लेखों को तैयार खण्डों में, प्रकाशित करने का निर्णय किया है, क्योंकि ये ऐतिहासिक अनुसंधान के काम में लगे हुए व्यक्तियों के लिए सहज सुलभ नहीं हैं । प्रोफेसर डी. सी. सरकार अपनी परियोजना के खण्ड २ में जो काम पहले ही शुरू कर चुके हैं, उसका और विस्तार किया जाएगा, ताकि उत्तर और दक्षिण भारत के शिलालेखों को व्यापक रूप से शामिल करते हुए खण्डों की एक सीरीज प्रकाशित की जा सके ।

२.२० इस परियोजना को लागू करने और इतिहासकारों का चयन करने के लिए विस्तृत योजनाएँ बनाने के लिए एक उप-समिति का गठन किया गया, जिसमें निम्न-लिखित सदस्य थे :

१. प्रोफेसर आर. एस. शर्मा
२. डा. पी. बी. देसाई
३. डा. जी. एस. घई
४. प्रोफेसर टी. वी. महालिंगम
५. डा. एम. जी. एस. नारायणन
६. डा. ए. एम. शास्त्री

७. प्रो. डी. सी. सरकार

८. सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्

२.२१ १२ फरवरी, १९७३ को प्रोफेसर आर. एस. शर्मा की अध्यक्षता में उप-समिति की बैठक हुई। उसने सिफारिश की कि शिलालेखों का क्षेत्रों के अनुसार और राजवंशों के अनुसार वर्गीकरण किया जाना चाहिए। दूसरे, शिलालेखों से संबंधित प्रत्येक खण्ड में प्रारंभ में ही एक समान्य परिचय, शिलालेख का मूलपाठ और उसका अनुवाद अथवा सारांश होना चाहिए। प्रत्येक खण्ड अनुमानतया ४०० पृष्ठों का होना चाहिए और प्रत्येक पृष्ठ में ४०० शब्द होने चाहिए। संस्कृत भाषा के सारे शिलालेखों को रोमन लिपि में उद्धृत किया जाना चाहिए। प्रत्येक खण्ड में नदियों, स्थानों, पारिभाषिक शब्दों, व्यक्तियों का इंडेक्स और धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक महत्व की बात, शिलालेखों का वितरण दर्शाने वाले मानचित्र और शिलालेखों में प्रयुक्त अक्षरों के चार्ट शामिल किए जाने चाहिए।

२.२२ यह निर्णय भी किया गया कि पूर्णकालिक आधार पर काम कर रहे एक इतिहासकार को छः महीने की अवधि के अन्दर एक खण्ड को पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए और अंशकालिक रूप में काम कर रहे इतिहासकार को एक वर्ष में एक खण्ड पूरा कर लेना चाहिए।

२.२३ भिन्न-भिन्न खण्डों को तैयार करने के लिए विस्तृत मार्गदर्शक सिद्धान्तों को अन्तिम रूप दिया गया।

२.२४ उप-समिति ने शिलालेखों के निम्नलिखित खण्डों को तैयार करने का काम प्रत्येक के सामने उल्लिखित इतिहासकार को सौंपा है :

खंड	खंड का शीर्षक	विद्वान, जिसे काम सौंपा गया
	१. पूर्व भारत	
(i)	इन्सक्रिप्शंस आफ आसाम	प्रोफेसर डी. सी. सरकार, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता
(ii)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि पलास एन्ड दि सेनास	डा. एस. के. मइती, दिल्ली
(iii)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि माइनर डाइनेस्टीज आफ बंगाल (गौडाज, चन्द्राज, वर्मनस इत्यादि)	डा. एस. के. मइती, दिल्ली

खंड	खंड का शीर्षक	विद्वान, जिसे काम सौंपा गया
(iv, v)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि साइलेंद भावाज, भमाकराज, सल्कीज, नन्दाज, टेंगांज एण्ड भन्जाज (२ खण्ड)	प्रोफेसर एन. के. साहू भुवनेश्वर
(vi, vii)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि ईस्टर्न गंगेज, कदम्बाज एण्ड दि गजपट्टीज (दो खण्ड)	डा. आर. सुब्रामण्यन नई दिल्ली
(viii)	इन्सक्रिप्शंस आफ बिहार	डा. सीताराम राय , पटना
	२. **उत्तर भारत**	
(ix)	इन्सक्रिप्शंस आफ पंजाब, काश्मीर, हिमाचल प्रदेश एण्ड दि एडज्वाइनिंग हिल्ली ट्रेक्ट्स	प्रोफेसर जगन्नाथ अग्रवाल चण्डीगढ़
(x)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि मोखरीज, वर्धनाज, लेटर गुप्ताज एण्ड यशोवर्मन आफ कन्नौज	डा. के. के. थपलयाल, लखनऊ
(xi)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि गहाडावलाज	डा. वी. एस. पाठक, गोरखपुर
	३. **मध्य और पश्चिमी भारत**	
(xii)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि इम्पीरियल प्रतिहाराज	डा. एल. के.त्रिपाठी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
(xiii)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि सरभापुरियाज, पांडुवामडीज एंड सोमावामडीज आफ साउथ कौशला एण्ड ओड़ीसा	डा. ए. एम. शास्त्री, नागपुर
(xiv)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि कलाचुरीज आफ खिश्मती एण्ड त्रुपुरी	बाद में लिया जाएगा
(xv)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि कलाचुरीज आफ साऊथ कौशला एण्ड सरयूपाड़ा इन्सक्रिप्शंस आफ दि चंडेलाज	इस खंड को छोड़ दिया गया है

खंड	खंड का शीर्षक	विद्वान, जिसे काम सौंपा गया
(xvi)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि गुहिलाज एण्ड दि अदर माइनर डाइनेस्टीज आफ राजस्थान	डा. एस. के. कत्ले, ग्वालियर
(xvii)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि चबामनाज एण्ड देयर कन्टैम्प्रेरीज	प्रोफेसर दशरथ शर्मा, जोधपुर
(xviii)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि मैत्रकाज, गुर्जराज, सैनधाराज एण्ड अदर प्री चौल्युक्यान डाइनेस्टीज आफ गुजरात	प्रोफेसर के. डी. बाजपेई, सागर
(xix)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि चालुक्याज, बघेलाज एण्ड माइनर डाइनेस्टीज आफगुजरात	डा. ए. के. मजूमदार , भारतीय विद्याभवन, बम्बई
(xx)	इन्सक्रिप्शंस आफ तोमाराज	डा एस. एल. कत्ले, ग्वालियर
	४. दक्खन और दक्षिण भारत	
(xxi)	इन्सक्रिप्शंस आफ अर्ली चालुक्याज एण्ड अलाइड इन्सक्रिप्शंस	बाद में लिया जाएगा
(xxii)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि इम्पीरियल राष्ट्रकुटाज एण्ड अदर राष्ट्रकूट फेमलीज आफ मध्यप्रदेश एण्ड महाराष्ट्र	डा. एस. शंकरनारायन मैसूर
(xxiii)	इन्सक्रिप्शंस आफ लेटर चालुक्याज एण्ड दि कल्चुरीज	श्री एम. एन. कत्ती मैसूर
(xxiv)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि हेईसलाज	डा. एस.एच.रित्ती, धारवाड़
(xxv)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि यादवाज आफ देविगिरि	बाद में लिया जाएगा
(xxvi)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि नैयर मौर्याज, कदम्बाज एण्ड अलूवाज	डा. जी. एस. घई, मैसूर
(xxvii)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि प्लवाज	प्रोफेसर टी. बी. महालिंगम मद्रास

खंड	खंड का शीर्षक	विद्वान, जिसे काम सौंपा गया
(xxviii)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि ककाटियाज आफ वारंगल	प्रोफेसर आर. सुब्रामण्यम नई दिल्ली
(xxix)	(क) इन्सक्रिप्शंस आफ दि वैसटर्न गंगाज, वैदुम्बाज एण्ड दि मोलम्बाज	प्रोफेसर पी. बी. देसाई, धारवाड़, डा. के. वी, रमेश, मैसूर
	(ख) इन्सक्रिप्शंस आफ दि बाराज	प्रोफेसर टी. वी. महालिंगम, मद्रास
(xxx)	इन्सक्रिप्शंस आफ चोलाज (खण्ड ४)	प्रोफेसर टी. वी. महालिंगम, मद्रास
(xxxi)	इन्सक्रिप्शंस आफ पापियाज (२ खण्ड)	डा. के. जी. कृष्णन, मैसूर
(xxxii)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि नायकाज आफ तंजौर, मदुराई एण्ड जिन्जी	प्रोफेसर टी. वी महालिंगम, मद्रास
(xxxiii)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि विजयनगर एम्परर्स	प्रोफेसर टी. वी. महालिंगम प्रोफेसर पी. बी. देसाई डा. जी. एस. घई (योजना तैयार की जानी है)
(xxxiv)	इन्सक्रिप्शंस आफ दि अरबिदूज	प्रोफेसर टी. वी. महालिंगम प्रोफेसर पी. बी. देसाई डा. जी एस. घई
(xxxv)	इन्सक्रिप्शंस आफ केरला अप टू ए.डी. १५०० (२ खण्ड)	डा. एम. जी. एस. नारायणन कालीकट विश्वविद्यालय कालीकट

भारतीय पुरातत्व शब्द कोश

२.२५ यह काम दो हिस्सों में किया जाएगा, जिसमें से एक स्थानों से संबंधित होगा और दूसरा विषयों से। इसमें एक अच्छे इंडेक्स की व्यवस्था भी की जाएगी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सी. आर. शर्मा और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के श्री बी. के. थापर से इसका ब्यौरा तैयार करने के लिए कहा गया है।

दुर्लभ और अप्राप्य सामग्री का पुनर्मुद्रण

२.२६ इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्नातक और स्नातकोतर छात्रों, अनुसंधान-कर्त्ताओं और कालेज अध्यापकों के इस्तेमाल के लिए अनुषंगी स्रोतों को प्रकाशित करना है।

चूंकि अनेक जरूरी किताबें पुस्तकालयों तक में उपलब्ध नहीं हैं और जो किताबें निजी प्रकाशक लोग प्रकाशित करते हैं, उनका मूल्य बहुत ज्यादा रखा जाता है, इसलिए परिषद् ने इन दुर्लभ और अप्राप्य पुस्तकों को जल्द-से-जल्द उचित मूल्य पर पाठकों को सुलभ कराने का निर्णय किया है। हालांकि पुनर्मुद्रण के कार्यक्रम के अन्तर्गत ज्यादातर अंग्रेजी सामग्री का ही समावेश होगा, तथापि जहां ऐसा करना जरूरी होगा, वहां इसमें क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकों को भी शामिल किया जाएगा। जहां पुस्तकों के लेखक अभी तक जीवित हैं, वहां उनसे पुस्तक में संशोधन करने के लिए कहा जा रहा है।

इस कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिए एक उप-समिति गठित की गई। जिसमें निम्नलिखित सदस्य हैं :

१. डाक्टर डी० एन० झा
२. डाक्टर आर० चम्पकलक्ष्मी
३. डाक्टर अमिता राय
४. श्री हितेश रंजन सान्याल
५. डाक्टर एस० सेत्तर
६. डाक्टर बी० एन० एस० यादव
७. सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्

२.२७. उप-समिति ने इस कार्यक्रम को तीन भागों में बांट दिया है।

(क) वर्तमान ऐतिहासिक प्रवृत्तियों से सम्बद्ध मूल पुस्तकें

उप-समिति ने सिफारिश की कि पहले चरण में, नीचे लिखी २४ किताबों के पुनर्मुद्रण का काम हाथ में लिया जाना चाहिए। परिषद् ने इस विषय में कार्रवाई शुरू कर दी है। इस काम में अच्छी प्रगति हो रही है।

१. ए० अप्पादुरई, इकानामिक कंडीशंस आफ सदर्न इंडिया (ईस्वी सन १०००-१५००) दो खण्ड
२. बी० एम० बरुआ, बरहूत
३. एच० बी० उहेर, ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ सिंध एण्ड बलूचिस्तान
४. हेनरी सेऊसन, दी चालूक्यान आर्किटेक्चर (विद माइनर रिविजंस कन्सर्निंग फैक्चुअल डाटा)
५. डब्ल्यू० क्रोक्के, ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ नार्थ-ईस्टर्न प्राविंसेज एंड अवध (४ खंड)
६. के० एम० दीक्षित, एक्सकेवेशन एट पहाड़पुर

७. आर० डी० फुटे, कैटलाग आफ दि प्रीहिस्टोरिक एन्टीक्यूटीज
८. यू० एन० घोषाल, एग्रेरियन सिस्टम इन एंसिएंट इंडिया
९. जी० ए० ग्रियर्सन, बिहार पीजैन्ट लाइफ
१०. डी० डी० कोसाम्बी, इंट्रोडक्शन दू दी स्टडी आफ इंडियन हिस्ट्री
११. स्टैला क्रैमिरिश, इंडियन स्कल्पचर
१२. लांग हर्स्ट, अमरावती एण्ड जगायापेट
१३. मलालशेकर, (सम्पादित) एनसाइक्लोपीडिया आफ बुद्धइज्म
१४. जान मार्शल, मोनुमैन्ट्स आफ सांची ३ खण्ड
१५. एस० सी० नंदीमठ, ए हैण्डबुक आफ विराशवैइज्म
१६. पंचानन नियोगी, कापर इन एनसिएन्ट इंडिया
१७. पंचानन नियोगी, आइरन इन एनसिएन्ट इंडिया
१८. नीहाररंजन रे, मौर्याज एण्ड सुंगा आर्ट
१९. एच० एच० रिसले, ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ बंगाल
२०. बी० ए० सालेटोर, सोशल एण्ड पालिटिकल लाइफ इन विजयनगर एम्पायर
२१. डब्ल्यू० एच० स्काफ, दी पैरीप्लस आफ दी एरिथवियन सी
२२. ई० थर्सटोन, कास्ट्स एण्ड ट्राइब्स इन सदर्न इंडिया (७ खण्ड)
२३. डब्ल्यू० डी० डी० विन्सेंट, दी कामर्स एण्ड नेवीगेशन आफ दी एनसिएन्ट्स इन दी इंडियन ओशन (२ खण्ड)
२४. ई० एच० वार्मिंगटन, कामर्स बिटवीन दी रोमन एम्पायर एण्ड इंडिया

(ख) पत्र-पत्रिकाओं से विषय वस्तु के अनुसार व्यवस्थित किए गए लेख

२.२८. उप-समिति ने यह भी सिफारिश की कि पत्र-पत्रिकाओं के विषय-वस्तु के अनुसार व्यवस्थित लेखों का पुनर्मुद्रण किया जाए। जिन इतिहासकारों से यह काम हाथ में लेने का निवेदन किया गया है, उनके नाम नीचे दिए गए हैं। जिन विषयों पर पत्र-पत्रिकाओं के महत्वपूर्ण लेखों को सूचीबद्ध किया जाना चाहिए, उनका प्रत्येक इतिहासकार के नाम के अथवा इतिहासकारों के समूह, जैसी भी स्थिति हो, के अपने सामने उल्लेख किया गया है।

१.	(i) श्री हीतेश रंजन सान्याल, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता	भारतीय कला (उत्तर भारत) का सामाजिक इतिहास
	(ii) प्रोफेसर एस० सेट्टूर कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़	भारतीय कला (दक्षिण भारत) का सामाजिक इतिहास

२.	(i) डाक्टर आर० चम्पकलक्ष्मी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली	मूर्तिकला और चित्रकला
	(ii) प्रोफेसर एस० सेट्टर	मूर्तिकला और चित्रकला
३.	(i) श्री हीतेश रंजन सान्याल	जातियां और आदिमजातियां
	(ii) डाक्टर सुवीर जायसवाल जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली	
४.	(i) डाक्टर अमिता रे कलकत्ता विश्वविद्यालय कलकत्ता	उत्पादन और प्रौद्योगिकी
	(ii) डाक्टर डी० एन० झा पटना विश्वविद्यालय पटना	
५.	(i) डाक्टर जी० एल० आद्या राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली	व्यापार और वाणिज्य
	(ii) डाक्टर बी० डी० चट्टोपाध्याय जवाहर लाल नेहरू विश्व- विद्यालय	
६.	(i) डाक्टर आर० एन० नन्दी पटना विश्वविद्यालय, पटना	भारतीय धर्म
	(ii) डाक्टर एन० एन० भट्टाचार्य कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता	
	(iii) डाक्टर आर० चम्पकलक्ष्मी	
७.	श्री डी० पी० चट्टोपाध्याय कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता	भारतीय दर्शन

(ग) विख्यात इतिहासकारों द्वारा लिखे हुए लेख

२.२९. उप-समिति ने यह सिफारिश भी की कि पहले चरण में नीचे लिखे विख्यात इतिहासकारों द्वारा लिखे गए हुए कुछ लेखों के पुनर्मुद्रण के काम को हाथ में लेना वांछनीय होगा :

१.	भारतीय मुद्राशास्त्र पर कोसाम्बी के लेख	डा० बी० डी० चट्टोपाध्याय
२.	भारतीय इतिहास और संस्कृति पर डी० डी० कोसाम्बी के लेख	डा० डी० एन० झा (दो खण्डों में)
३.	क्रैमरिच पर चुने हुए लेख	डा० अमिता रे
४.	भारतीय मन्दिरों पर स्वर्गीय निर्मल कुमार बोस के लेखों का संग्रह	श्री हीतेश रंजन सान्याल
५.	डा० आनन्द कुमार स्वामी के चुने हुए लेख	प्रोफेसर एस० सेट्टर

२.३०. उप-समिति ने यह सिफारिश भी की कि परिषद को निम्नलिखित स्रोत-पुस्तकों के पुनर्मुद्रण के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए :

१. एपोग्राफिक कैरेनेटिका, खण्ड १-१२
२. साऊथ इंडियन इन्सक्रिप्शंस
३. एपोग्राफिक इंडिका के वे खण्ड, जो निजी प्रकाशकों ने प्रकाशित नहीं किए हैं
४. एनुअल रिपोर्टस आफ साऊथ इंडियन एपीग्राफी
५. त्रावनकोर रिपोर्टस आरकियोलाजिकल सीरीज
६. एनुअल रिपोर्टस आफ दी मैसूर आरकियोलाजिकल डिपार्टमेंट १९०६–१९३२

परिषद् बहुत जल्द ही इस कार्यक्रम का 'भारत के शिलालेख' संबंधी परियोजना के एक भाग के रूप में समावेश करेगी ।

शिलालेखों में प्रयुक्त शब्दों की शब्दावली

२.३१. मुख्य पुरालेखनेता, मैसूर कार्यालय के श्री डा० सीतारमण को पांच भाषाओं अर्थात् संस्कृत, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम में शिलालेखों का समावेश करने वाली शब्दावली से संबंधित परियोजना पर विचार किया गया । इसे पहले चरण में हाथ में लेने का निर्णय किया गया ।

स्रोत सामग्री का तयार किया जाना

(मध्यकालीन भारतीय इतिहास)

२.३२. स्रोत सामग्री और इतिहास के स्रोतोन्मुखी अध्यापन, अधिगम और अनुसंधान को महती जरूरत को स्वीकार करते हुए परिषद् ने निम्नलिखित लोगों की एक समिति बनाई। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री, प्रोफेसर एस० नूरुल हसन ने २ सितम्बर, १९७२ को हुई समिति को बैठक की अध्यक्षता की। समिति के अन्य सदस्य हैं:

१. डाक्टर कयामुद्दीन अहमद (सहयोजित सदस्य)
२. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
३. प्रोफेसर बी० एन० गोस्वामी
४. प्रोफेसर जे० एस० ग्रेवाल
५. प्रोफेसर इरफान एम० हबीब
६. प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी
७. प्रोफेसर एस० सी० मिश्र
८. प्रोफेसर के० ए० निजामी
९. प्रोफेसर तपन राय चौधरी
१०. डा० बी० पी० सक्सेना (सहयोजित सदस्य)
११. डा० रघुबीर सिंह (सहयोजित सदस्य)
१२. अध्यक्ष, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्
१३. सचिव, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्

अपनी पहली बैठक में समिति ने निम्नलिखित सिफारिशें की :

१. एम० ए० के छात्रों के लिए सबसे बड़ी जरूरत स्रोत सामग्री के स्पष्ट रूप में सम्पादित, सटिप्पण और प्रलेखीकृत संग्रहों के प्रकाशन की है जिसमें लगभग ५०० पृष्ठों के एक ही खण्ड में १२००-१७५० की अवधि का समावेश किया गया हो।

२. अनुसंधान छात्रों तथा और भी विशेष अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित श्रेणियों की स्रोत सामग्री को तैयार करने का काम पहले शुरू किया जाना चाहिए :

(क) १६ वीं, १७वीं, १८ वीं और प्रारंभिक १९ वीं शताब्दियों से संबंधित फारसी इतिवृत्तों की मूल पुस्तकों और अनुवादों को प्रकाशित करना।

(ख) संक्षिप्त परिचय और विस्तृत सारांशों के साथ मूल प्रशासकीय नियम-पुस्तकों का प्रकाशन ।

(ग) भारत के संबंध में यूरोपीय भाषाओं में लिखे हुए प्रलेखों का संकलन और अनुवाद। यह काम ३ अथवा ४ विद्वानों के एक ऐसे दल को सौंपने का जिन्होंने फ्रेंच, डच, पोर्तगीज और लेटिन में विशेषज्ञता प्राप्त की है और विद्वानों को यह परियोजना चलाने की दृष्टि से, अगर आवश्यक हो तो, अध्येता वृत्तियां प्रदान करने का भी फैसला किया गया ।

(घ) पुरालेख सामग्री का, विशेष रूप से दक्षिण भारत से संबंधित सामग्री का संकलन, जैसे कि एपीग्रफिया कैरेनैटिका, साऊथ इंडियन इन्सक्रिप्शंस आदि में प्रकाशित शिला-लेख ।

(ङ) क्षेत्रीय स्रोत सामग्री का प्रकाशन ।

स्रोतों का पता लगाने और उनके संग्रह तथा संकलन को व्यवस्थित करने के लिए काम शुरू करने के लिए चार क्षेत्रीय समितियां बनाई जा सकती हैं ।

पंजाब	प्रोफेसर जे० एस० ग्रेवाल, संयोजक
महाराष्ट्र	प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी, संयोजक
बिहार	डा० कयामुद्दीन अहमद, संयोजक
गुजरात	प्रोफेसर एस० सी० मिश्र, संयोजक

१ तथा २ के अन्तर्गत योजनाओं का चरणों के अनुसार निष्पादन करने के लिए अध्यक्ष, जहां जरूरी होगा वहां विशेषज्ञों को सहयोजित करके उप-समितियों का गठन करेंगे ।

२.३३. निम्नलिखित सदस्यों को लेकर यूरोपीय स्रोतों के अनुवाद से संबंधित एक उपसमिति बनाई गई :

१. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
२. डा० सुरेन्द्र गोपाल
३. डा० अशीन दास गुप्त
४. प्रोफेसर जार्ज मारेस
५. डा० ओम प्रकाश
६. डा० अनिरुद्ध रे
७. प्रोफेसर तपन राय चौधरी
८. डा० एन० पी० वर्मा
९. सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्

२.३४. इस कार्यक्रम को दो भागों में शुरू किया जा सकता है, पहला प्रोफेसर तपन राय चौधरी द्वारा डच रिकार्डों के संकलन (१६१२-१७) में अपनाई गई पद्धति पर रिकार्डों की विवरणी तैयार करने, और स्रोतों के उद्धरणों के भाष्य सहित अनुवाद से संबंधित होगा, दूसरा प्रत्येक यूरोपीय भाषा में भारत से संबंधित स्रोतों की प्रेस-सूची तैयार करने से सम्बद्ध होगा।

२.३५. प्रथम अवस्था में निम्नलिखित भाषा रिकार्डों को हाथ में लिया जा सकता है :

(i) **डच रिकार्ड**

एक विवरणी तैयार करने के कार्यक्रम में १६१८-२३ की अवधि का समावेश किया जा सकता है। दिल्ली विश्वविद्यालय के डाक्टर ओम प्रकाश से निवेदन किया जाए कि वे इस परियोजना को अपने हाथ में लें। वे इस मामले में प्रोफेसर तपन राय चौधरी से परामर्श कर सकते हैं।

समय अवधि—२ वर्ष

(ii) **पुर्तगाली रिकार्डस**

मोनेसेस डो रैनो (Moncees Do Reino) (मानसून पत्रों) से संबंधित विवरण और संग्रह। इस काम को एक विस्तृत प्रस्तावना देकर किया जाए।

प्रभारी इतिहासकार—डा० जार्ज मोरेस

समय-अवधि—२ वर्ष

(iii) **फ्रांसीसी रिकार्डस्**

पहली आधी १८ वीं शताब्दी तक के फ्रेंच यात्रियों के विवरणों का संग्रह और अनुवाद। अनुवाद के अलावा, इस खण्ड में विदेशी यात्रियों और स्रोतों की एक वर्णानात्मक सूची भी शामिल होगी। डा० अनिरुद्ध रे से इस परियोजना की योजना तैयार करने के लिए कहा गया है।

समय-अवधि—२ वर्ष

(iv) **लेटिन रिकार्डस**

लेटिन रिकार्डों के संबंध में फादर ए० डे० कोस्ट और फादर हैम्बे से अपने सुझाव देने के लिए सम्पर्क किया जाए।

(v) **रूसी रिकार्डस**

३०० पृष्ठों का एक खण्ड, जिसमें १७ वीं और १९ वीं शताब्दियों की अवधि के चुने हुए रूसी दस्तावेजों का अनुवाद अन्तर्विष्ट हो।

प्रभारी इतिहासकार—डा० सुरेन्द्र गोपाल

समय-अवधि—२ वर्ष

(vi) **आर्मेनियाई स्रोत**

प्रोफेसर तपन राय चौधरी से निवेदन किया गया है कि वे इस प्रयोजन के लिए आर्मेनियन कालेज, कलकत्ता, के उपयुक्त व्यक्तियों से सम्पर्क करें।

२.३६. समिति ने यह भी कहा कि एम० ए० के विद्यार्थियों के लिए एक ही खण्ड में स्रोत-सामग्री के संग्रह तैयार करते समय, जैसी कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोतों से संबंधित मुख्य समिति ने सिफारिश की थी, विदेशी स्रोतों का उपयोग भी किया जाएगा।

चालू परियोजनाएँ

(i) **अकबर के राज्य-काल के प्रारंभिक स्रोतों का हिन्दी अनुवाद**

२.३७. डा० एस० अत्तर अब्बास रिज़वी, रीडर, एशियाई सभ्यता, कैनबरा विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया ने इस परियोजना को चलाने के लिए सहायता देने के लिए परिषद् से प्रार्थना की। इस परियोजना के लिए पैसा केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय को देना था। परिषद् ने इस काम की देखरेख करने का निर्णय लिया।

उपर्युक्त परियोजना के लिए अनुवादक नियुक्त किए गए और अनुवादों के कई नमूने भी प्राप्त हुए हैं।

(ii) **औरंगजेब के राज्यकाल के अखबारात का अनुवाद**

२.३८. प्रोफेसर इरफान हबीब ने यह परियोजना परिषद् के सामने रखीं। उन्होंने २ वर्षों में १२ खण्ड प्रकाशित करने का प्रस्ताव किया। उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया और पहला खण्ड तैयार किया जा रहा है।

२.३९. भारतीय विद्यालयों के एम० ए० के छात्रों के उपयोग के लिए मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोतों पर दो खण्ड तैयार करने की बात स्वीकार की गई।

२.४०. मध्यकालीन भारतीय इतिहास के इतिवृत्तों का सम्पादन, अनुवाद और पुनर्मुद्रण करने के लिए एक योजना तैयार की गई।

स्रोतों का प्रकाशन

२.४१. शाहनामा-ए-मुनव्वर कालम का डा० एस० हसन अस्करी द्वारा तैयार किया गया अंग्रेजी रूपान्तर प्राप्त हुआ।

स्रोत सामग्री का तैयार किया जाना
आधुनिक भारतीय इतिहास

२.४२. इस अवधि से संबंधित स्रोतों के संकलन के लिए निम्नलिखित सदस्यों की एक समिति बनाई गई, जिसका गठन इस प्रकार है :

१. अध्यक्ष
२. प्रोफेसर बी० शेख अली
३. प्रोफेसर विपन चन्द्र
४. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
५. प्रोफेसर वरुण डे
६. प्रोफेसर एस० गोपाल
७. डा० एस० एन० प्रसाद
८. प्रोफेसर के० राज्ययन
९. प्रोफेसर तपन राय चौधरी
१०. प्रोफेसर हीरा लाल सिंह
११. प्रोफेसर अमलेश त्रिपाठी
१२. सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्

२.४३. समिति की पहली बैठक ३० जुलाई, १९७२ को हुई और प्रथम चरण में आधुनिक भारतीय इतिहास संबंधी स्रोत सामग्री तैयार करने के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों को चुना गया :

क. (i) १९ वीं शताब्दी के आर्थिक इतिहास पर खण्डों की एक शृंखला
(ii) आधुनिक भारतीय इतिहास (१९वीं शताब्दी १९४७ तक) के आंकड़ों पर खण्डों की एक शृंखला

ख. (i) भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास पर प्रलेखों के खण्डों की एक शृंखला
(ii) १८५८ से पहले ब्रिटिश शासन के खिलाफ आन्तरिक विरोध पर एक खण्ड

ग. भारत को आजादी मिलने के सम्बन्ध में खण्डों की एक सीरीज़। यह परियोजना भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् और भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार संयुक्त रूप से चला रहे हैं।

२.४४. स्रोत सामग्री तैयार करते समय सभी स्रोतों का, जिसमें क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध स्रोत भी शामिल हैं, उल्लेख करना होगा।

२.४५. परिषद् उपयुक्त अवस्था में उन स्रोतों का पुनर्मुद्रण कराने का भी विचार कर सकती है, जो दुर्लभ और अप्राप्य हैं। उन किताबों का पता लगाने के लिए, जो कि अप्राप्य हैं, और आगे विचार करने के लिए एक उप-समिति गठित की जा सकती है।

२.४६. इस सारी योजना का ब्यौरा तैयार करने के लिए अध्यक्ष, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् को तीन उप-समितियां स्थापित करने का अधिकार दिया गया है।

२.४७. समिति ने आगे बताया कि जहां तक सम्भव हो, एक ५-वर्षीय अनुसूची का पालन किया जाना चाहिए और प्रत्येक परियोजना के लिए अनुसंधान सहायकों की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि वह निश्चित समय-अवधि के अन्दर उसे पूरा कर सके।

२.४८. राष्ट्रीय आन्दोलन से संबंधित स्रोत सामग्री तैयार करने के लिए निम्न-लिखित उप-समिति का गठन किया गया।

१. प्रोफेसर एस० गोपाल, संयोजक
३. प्रोफेसर ए० आर० देसाई
३. डा० मनोरंजन झा
४. प्रोफेसर विमल प्रसाद
५. डा० एस० एन० प्रसाद
६. प्रोफेसर के० राजय्यन
७. प्रोफेसर टी० के० रवीन्द्रन
८. डा० सुमित सरकार
९. श्री जगदीश शर्मा
१०. प्रोफेसर हीरा लाल सिंह
११. सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्

२.४९. इस समिति की २१ अक्तूबर, १९७२ को बैठक हुई और उसने निम्नलिखित कार्यक्रम को अपने हाथ में लेने का फैसला किया।

२.५०. १८५८ से पहले ब्रिटिश शासन के खिलाफ आंतरिक विरोध संबंधी परि-योजना (१ खण्ड) के लिए प्रोफेसर के० राजय्यन को प्रधान सम्पादक बनाया गया।

२.५१. १८५८-१९०५ की अवधि विषयक परियोजना में छः खण्डों को प्रकाशित करने का काम निहित है और प्रोफेसर विपन चन्द्र इस परियोजना के प्रधान सम्पादक हैं। उन्होंने १८८५-८६ के आन्दोलन से संबंधित खण्ड के संकलन का काम करना भी

स्वीकार कर लिया है। प्रोफेसर एस० आर० मलहोत्रा को १८५८ से १८८५ तक की अवधि का काम सौंपा गया है। बाकी अवधि के काम अभी बांटे जाने हैं।

२.५३. उन इतिहासकारों के नाम, जिन्हें कि स्रोत सामग्री के संकलन का काम सौंपा गया है और जिस अवधि की सामग्री का उन्हें संकलन करना है, उसका यहां प्रत्येक के आगे उल्लेख किया गया है :

राष्ट्रवादी आन्दोलन

बंगाल का विभाजन

	१९०५-१९	**४ खन्ड**
प्रोफेसर टी० के रवीन्द्रन	——	प्रधान सम्पादक
डा० सुमित सरकार	——	१९०५-०९ (२ खण्ड)
प्रोफेसर एम० एन० दास	——	१९०१०-१५ (१ खण्ड)
प्रोफेसर टी० के रवीन्द्रन	——	१९१५-१९ (१ खण्ड)
	१९१९-३७	**८ खन्ड**
प्रोफेसर विमल प्रसाद	——	प्रधान सम्पादक
प्रोफेसर वी० एन० दत्ता	——	१९१९-२०
प्रोफेसर सीताराम सिंह	——	१९२०-२२
डा० एम० पी० श्रीकुमारन नय्यर	——	१९२२-२४
प्रोफेसर अम्बा प्रसाद	——	१९२४-२६
प्रोफेसर विमल प्रसाद	——	१९२७-२९
प्रोफेसर विमल प्रसाद	——	१९३०-३१
प्रोफेसर विपन चन्द्र	——	१९३२-३४
डाक्टर गोपाल कृष्ण	——	१९३४-३७

२.५३ किसान आन्दोलन

डा० विनय चौधरी से निवेदन किया गया कि वे किसान आन्दोलन पर स्रोत खण्डों को तैयार करने की जिम्मेदारी अपने हाथ में ले लें। उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया।

२.५४. १८५८ से पहले दक्षिण भारत के किसान आन्दोलन से संबंधित एक खण्ड प्रोफेसर टी० के० रवीन्द्रन तैयार कर रहे हैं।

२.५५ ट्रेड यूनियन आन्दोलन

प्रोफेसर ए० आर० देसाई—प्रधान सम्पादक

प्रोफेसर देसाई ने सम्पादन के रूप में निम्नलिखित व्यक्तियों की सहायता से इस विषय पर दस खण्ड निकालने की योजना बनाई है :

१. प्रोफेसर एस० डी० पुणेकर,
टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइसेंज
बम्बई

२. डा० (श्रीमती) एम० जी० साबूर
समाजशास्त्र विभाग
बम्बई विश्वविद्यालय

३. डा० एम० एन० वी० नय्यर
समाजशास्त्र विभाग
बम्बई विश्वविद्यालय

२.५६ आर्थिक और सांख्यिकीय आंकड़ें

सांख्यिकीय खण्डों को तैयार करने से संबंधित कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए एक उप-समिति बनाई गई। ऐसा महसूस किया जाता है कि आर्थिक आंकड़ों का संग्रह और संसाधन इतिहास के अनुसंधान छात्रों और अध्यापकों के लिए तो उपयोगी होगा ही, सामाजिक और राजनीतिक इतिहासकारों के लिए भी उपयोगी होगा। इसलिए उप-समिति ने तय किया कि इसमें लगभग १९३० से शुरू होने वाली आधुनिक औपनिवेशिक अवधि का भी समावेश किया जाना चाहिए। लेकिन आंकड़ों के बारे में कोई सख्ती नहीं बरती जाएगी।

२.५७. कृषि, लगान और राजस्व, वित्त और करेंसी, आंतरिक और विदेशी व्यापार, उद्योग और श्रम, मूल्य और मजदूरी पर सांख्यिकीय आंकड़ों से संबंधित खण्डों की एक शृंखला की योजना बनाई जा रही है।

२.५८. डा० एस० भट्टाचार्य ने १ मार्च, १९७३ से वित्त और करेंसी से संबंधित खण्ड पर काम करना शुरू कर दिया है। एक अनुसंधान सहायक की नियुक्ति की जा चुकी है और अनुदान की पहली किस्त दे दी गई है। यह खण्ड लगभग ९ महीनों में तैयार हो जाने की संभावना है।

२.५९. उद्योग से संबंधित सांख्यिकीय खण्ड का काम प्रोफेसर ए० के० बागची ने अपने हाथ में लिया है। उन्होंने १८१८-१८१९ की अवधि के लिए भारतीय औद्योगिक आंकड़ों का समावेश करने को प्रस्ताव किया है। समाज विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता परियोजना के स्टाफ की आवास-व्यवस्था और उससे संबंधित सामग्री की व्यवस्था करेगा। इस परियोजना से संबंधित काम ३ मार्च, १९७३ को शुरू हुआ।

२.६०. लखनऊ विश्वविद्यालय के डा० वी० बी० सिंह ने श्रम, मूल्य और मजदूरी से संबंधित सांख्यिकीय खण्ड के संकलन का काम करना स्वीकार कर लिया है। इस

खण्ड में १९१४ से १९४५ की अवधि शामिल होगी। चूंकि मजदूरी, मूल्यों, उनके संशोधनों, औद्योगिक संबंधों और जीवन-स्तरों से संबंधित आंकड़े शिमला, दिल्ली और कलकत्ता में बिखरे पड़े हैं, इसलिए यह काम इन सभी तीनों केन्द्रों पर करने की योजना बनाई जा रही है। ज्यादातर काम की व्यवस्था शिमला और दिल्ली में की जा रही है।

पुनर्मुद्रण कार्यक्रम

२.६१. अध्यक्ष, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् ने आधुनिक काल से संबंधित पुनर्मुद्रण के कार्यक्रम पर कार्रवाई करने के लिए अगस्त, १९७२ में निम्नलिखित सदस्यों की एक उप-समिति गठित की :

१. प्रोफेसर बरुण डे — संयोजक
२. प्रोफेसर बी० शेख अली
३. प्रोफेसर फैजा सिंह बाजवा
४. श्री इक्तिदार आलम खां
५. प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी
६. सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्

२.६२. इस समिति ने २७ नवम्बर, १९७२ को हुई अपनी बैठक में फैसला किया कि दुर्लभ और अप्राप्य किताबों और लेखों को पुनर्मुद्रण कराया जाए। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों तथा अनुसंधान का काम शुरू करने वाले व्यक्तियों के इस्तेमाल के लिए सहायक स्रोत निकालना है। पुनर्मुद्रण के कार्यक्रम में ज्यादातर तो अंग्रेजी की सामग्री का ही समावेश होगा, परन्तु जहां जरूरी होगा, वहां क्षेत्रीय भाषाओं की किताबों को भी इसमें शामिल किया जाएगा। पहले चरण में २० से ३० किताबों के पुनर्मुद्रण का लक्ष्य रखने का फैसला किया गया।

२.६३. इन किताबों की प्रेस प्रति तैयार करने की जिम्मेदारी नौ इतिहासकारों को दी गई, जो अगर जरूरी हुआ तो, प्रेस प्रति तैयार करने का वास्तविक काम अन्य इतिहासकारों को सौपेंगे, ताकि व्यापक शैक्षिक सहयोग प्राप्त किया जा सके। प्रत्येक पुनर्मुद्रण की प्रेस प्रति तैयार करने के लिए छः महीने की अवधि तय की गई।

२.६४. पूना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी ने १० किताबों का भार अपने ऊपर लेने की कृपा की है और उन्होंने उन्हें भिन्न-भिन्न इतिहासकारों में बांट दिया है, जैसा कि नीचे दिया गया है :

क्रम संख्या	लेखक	किताब का शीर्षक	इतिहासकार, जिसे काम सौंपा गया है
१.	बी० के० भावे	पेशवाकालीन महाराष्ट्र	प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी
२.	थामस डुएर ब्राघटन	लैटर्स फ्राम ए मराठा कैम्प डचूरिंग द ईयर १८०९	प्रोफेसर बी० एन० अथावले
३.	डी० सी० ग्राहम	स्टैटिस्टीकल रिपोर्ट आन दी प्रिंसिपलिटी आफ कोल्हापुर	डा० ए० जी० पवार
४.	जे० डी० बी० ग्रिब्बले	ए हिस्ट्री आफ डेक्कन (२ खण्ड)	डा० एम० के० धवालीकर
५.	टी० बी० जरबिस	वेट, मेजर्स एण्ड क्वाइन्स आफ इंडिया।	प्रोफेसर जी० एच० खरे
६.	राबर्ट ग्रार्मे	हिस्टोरिकल फरेगमैन्ट्स आफ मुगल एम्पायर	डा० के० एन० चिटनिस
७.	एच० जी० रालिन्सन आर० पी० पटवर्धन	ए० सोर्स बुक आफ मराठा हिस्ट्री	डा० पी० एम० जोशी
८.	सुरेन्द्र नाथ सेन	फारेन बायोग्राफीज आफ शिवाजी	प्रोफेसर वरुण डे
९.	सुरेन्द्र नाथ सेन	शिवाजी छत्रपति	डा० डी० सी० गुप्ता
१०.	डब्ल्यू० एच० स्लीमैन	रैम्बलज एण्ड रीकलक्शंस आफ ऐन इंडियन आफिशियल	प्रोफेसर ए० एम० देशपांडे

२.६५. निम्नलिखित पांच किताबों को तैयार करने की जिम्मेदारी प्रोफेसर वरुण डे ने ली है :

१. एनानीमस, दी जमींदारी सैटलमैंट आफ बंगाल (२ खण्ड)
२. ब्रिग्स, हैदराबाद
३. किर्क पैट्रिक, सलैक्टेड लैटर्स आफ टीपू सुल्तान

२.६६. प्रोफेसर बी० शेख अली ने निम्नलिखित तीन किताबों की जिम्मेदारी ली:

१. मार्क विल्स, एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट आफ मैसूर

२. क्रिप्स, ब्रिटिश इण्डिया एनेलाइज्ड

३. तशारे-ई-उलीमा-एहिन्द

२.६७. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के श्री इक्तिदार आलम खां को निम्नलिखित तीन किताबों की जिम्मेदारी दी गई :

१. तुफैल अहमद, हिन्दुस्तानी मुसलमानों का रोशन मुस्तकबिल

२. के० एम० अशरफ, कलैक्शन आफ इस्सेज (इन उर्दू)

३. मोहन लाल, ट्रेवल्स

२.६८. पंजाबी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर फौजा सिंह ने निम्नलिखित चार किताबों की जिम्मेदारी ली है और उन्होंने प्रेस प्रति तैयार करने का काम दूसरे इतिहासकारों को बांट दिया है, जैसा कि नीचे बताया गया है :

	लेखक	किताब का शीर्षक	इतिहासकार, जिसे काम सौंपा गया है
१.	सर डेंजिल इबेटसन और सर एडवर्ड मैकलागोन	ग्लौसरी आफ दि ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ दि पंजाब एण्ड एन० डब्ल्० एफ० पी०	डा० गेंदा सिंह
२.	राय काली राय और लाला तुलसी राम	किताब-ए-शेर-ए-पंजाब	डा० भगतसिंह
३.	हुथ कैनेडी टैविस्किस	लैण्ड आफ फाइव रिवर्स: एन इकानामिक हिस्ट्री आफ दि पंजाब फ्राम दि अर्लिएस्ट टाइम्स टू १८९०	एस० गुरुचरण सिंह
४.	एस० एफ० थोरबर्न	मुसलमान्स एण्ड मनी-लैन्डर इन दि पंजाब	डा० बी० एस० निज्जर

२.६९. केरल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर टी० के० रवीन्द्रन, विलियम लोगन कृत 'मालाबार' (३ खण्डों में) की प्रेस प्रति तैयार कर रहे हैं।

२.७०. एम० एस० विश्वविद्यालय, बड़ौदा के डाक्टर वी० के० चावदा ने गुजरात के इतिहास (गज़ेटियर अनुभाग) का काम हाथ में लिया है ।

२.७१. कलकत्ता विश्वविद्यालय के श्री अशोक सेन और कालीकट विश्वविद्यालय के डा० एम० जी० एस० नारायण से क्रमशः हन्टर कृत स्टैटिस्टीकल एकाउन्ट्स आफ बंगाल और पद्मनाभ मेनन कृत हिस्ट्री आफ केरल, किताबों की प्रेस प्रतियां तैयार करने का काम अपने हाथों में लेने की प्रार्थना की गई है ।

२.७२. इस प्रकार परिषद् अपने पहले चरण में २६ दुर्लभ किताबों के पुनर्मुद्रित संस्करण निकालेगी ।

२.७३. पुनर्मुद्रण समिति ने यह फैसला भी किया है कि क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध सामग्री को विशिष्ट विषय-वस्तुओं के इर्द-गिर्द संकलित और एकत्रित किया जाए । इस प्रयोजन के लिए '१९ वीं शताब्दी के भारत में राष्ट्रीय चेतना का उद्गम' विषय सुझाया गया है । इस कार्यक्रम के अन्तर्गत पुनर्मुद्रण के लिए दुर्लभ और अप्राप्य किताबों का पता लगाया जाएगा ।

दक्षिण एशिया से संबंधित स्रोतों को तैयार करना

२.७४. प्राचीन इतिहास से संबंधित स्रोत सामग्री विषयक समिति ने महसस किया है
कि दक्षिण एशियाई क्षेत्रों के इतिहा
इसलिए उसने सिफारिश की है कि इ
में लिया जाए । लेकिन इलाहाबाद
इस परियोजना की योजना तैयार

अध्याय 3

परिषद् की सहायक अनुदान योजनाएँ

अनुसंधान परियोजनाओं को वित्तीय सहायता

३.०१. परिषद् ने ऐतिहासिक अनुसंधान परियोजनाओं की छानबीन के लिए और छात्रों को वित्तीय सहायता देने के लिए एक योजना बनाई। इसमें डाक्टरेट कर रहे और डाक्टरेट प्राप्त दोनों ही तरह के छात्र शामिल होंगे।

३.०२. इस कार्यक्रम के अंतर्गत परिषद् शैक्षिक परामर्श और वित्तीय-सहायता के लिए इतिहास की किसी भी शाखा विशेष विषयों पर आधारित अनुसंधान परियोजनाओं या ठोस ऐतिहासिक अभिनीत और अन्तर्वस्तु वाले किसी अन्य विषय की ऐसी अनुसंधान परियोजनाओं पर विचार करती है जिनमें अकेले या सामूहिक रूप से काम करने की जरूरत हो।

३.०३. अनुसंधान संबंधी प्रस्तावों पर विशेषज्ञों के विचार आमंत्रित किये जाते हैं और उनकी राय के साथ प्रस्तावों को अनुसंधान परियोजना समिति के सामने विचार करने के लिए अंतिम रूप से पेश कर दिया जाता है। जहां कहीं भी जरूरी होता है, परियोजनाओं के लेखकों से निवेदन किया जाता है कि वे अपनी परियोजनाओं को नया रूप देकर उन्हें परिशोधित कर दें।

३.०४. वर्ष १९७२-७३ के दौरान अनुसंधान परियोजना समिति की सात बैठकें हुई और उसने उन्नीस अनुसंधान परियोजनाओं का अनुमोदन किया।

३.०५. अनुसंधान परियोजना समिति द्वारा अब तक अनुमोदित अनुसंधान परियोजनाओं के ब्यौरे नीचे दिये गये हैं :

परियोजना सं० १

परियोजना का नाम	उन्नीसवीं सदी के दौरान उत्तर-भारत में ब्रिटिश मिशनरी
परियोजना निदेशक	श्री ए० एन० नागपाल, अनुसंधान छात्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	यह परियोजना उन मिशनरी रिकार्डों पर आधारित होगी जिनका कुछ छात्रों ने अध्ययन किया है। उद्देश्य यह है कि यूरोपीय प्रभुत्व के विस्तार और सामाजिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों में विदेशी मिशनरी समितियों के कार्य-कलापों के प्रसार के युग के दौरान विदेशी मिशनरी समितियों की सामाजिक एवं सैद्धांतिक पृष्ठभूमि का पता लगाया जाए। यह परियोजना सरकार के साथ मिशनों के संबंध की जांच करेगा, ईसाई समुदाय के संगठन, चरित्र और भूमिका का तथा अन्य समुदायों पर ईसाई कार्यकलापों के प्रभाव का सर्वेक्षण करेगा।
समय अवधि	२ वर्ष
मंजूर की गई रकम	३,०००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

परियोजना सं० २

परियोजना का नाम	'मेमरीज डी फ्रेंकाइस मार्टिन' नामक फ्रांसीसी प्रकाशन का अनुवाद
परियोजना निदेशक	डा० अनिरुद्ध रे, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	यह परियोजना फ्रेंकाइस मार्टिन के १७ वीं सदी के संस्मरणों के ३ खंडों के अंग्रेजी अनुवाद से सम्बंध रखती हैं। डाक्टर अनिरुद्ध रे प्रथम दो खंडों पर कार्य करेंगे जिसमें मसुलीपटनम तक का विवरण होगा।
समय अवधि	१ वर्ष
मंजूर की गई रकम	२,०००.०० रु०
दी गई रकम	१,५००.०० रु०

परियोजना सं० ३

परियोजना का नाम	भारतीय विदेश नीति का उद्गम नामक ग्रंथ के द्वितीय खंड का समापन
परियोजना निदेशक	डाक्टर विशेश्वर प्रसाद ३४, चैथम लाइन्स इलाहाबाद-२

परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	इस खंड में १९२० तक की भारतीय विदेश नीति का इतिहास प्रस्तुत किया जाएगा । इस खंड के लिए स्रोत सामग्री भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार में रखे हुए कार्यवाही खंडों और गवर्नर जनरल के निजी कागजातों से इकट्ठी की जाएगी । यह अध्ययन प्रथम महायुद्ध के दौरान अफगानिस्तान, ईरान, मध्य-एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और अन्य इलाकों के प्रति सरकार के रवैये की जांच पड़ताल करेगा । इसमें अंग्रेजी शासनकालीन भारत और राष्ट्र-संघ के बारे में भी चर्चा की जाएगी ।
समय अवधि	एक वर्ष
मंजूर की गई रकम	१०,८००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

परियोजना सं० ४

परियोजना का नाम	उन्नीसवीं सदी में उत्तर पश्चिम प्रांतों में दस्तकारी उद्योग की स्थिति
परियोजना निदेशक	श्री सुरेशचन्द्र सहगल, हिंदू महाविद्यालय दिल्ली-७
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय-क्षेत्र	आमतौर पर यह धारणा है कि बहुत बड़े पैमाने पर निर्यात के लिए वस्तुएं तैयार करने वाले समृद्धिशील उद्योग ब्रिटेन की मशीन द्वारा निर्मित वस्तुओं की प्रति-स्पर्धा में नष्ट हो गये थे। हाल ही के वर्षों में एक विरोधी प्राक्कल्पना ने जन्म लिया जिसके अनुसार ब्रिटेन के मशीनी वस्त्रों ने भारत के हस्त-शिल्प पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाला था। यह परियोजना उत्तर प्रदेश के संदर्भ में इन परस्पर विरोधी प्राक्कल्पनाओं की तर्क-संगति का परीक्षण करने के लिए तैयार की गई हैं ।
समय अवधि	१½ वर्ष
मंजूर की गई रकम	५,०००.०० रु०
दी गई रकम	२,०००.०० रु०

परियोजना सं० ५

परियोजना का नाम	मुगल साम्राज्य की ऐटलस तैयार करना
परियोजना निदेशक	प्रोफेसर मूनिस रज़ा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय-क्षेत्र	इस परियोजना के मुगल काल के लगभग १५० नक्शे तैयार करने का प्रस्ताव है । ऐटलस् का प्रथम खंड 'अवध की सुबह' होगा ।
समय की अवधि	१ वर्ष
नंजूर की गई रकम	११,२००.०० रु०
दी गई रकम	६,०००.०० रु०

परियोजना सं० ६

परियोजना का नाम	भारत में साम्यवादी आंदोलन का इतिहास १९१७-१९५६
परियोजना निदेशक	श्री पी० सी० जोशी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली
पयिोजना का स्वरूप और उसका विषय-क्षेत्र	इस परियोजना का उद्देश्य १९१७-१९५६ के दौरान साम्यवादी आंदोलन की उत्पत्ति और विकास से संबंधित दस्तावेजों को प्रकाशित करना है । यह परियोजना राष्ट्रीय आंदोलन के साथ भारतीय साम्यवाद का संबंध बताने वाले दस्तावेजों को प्रकाशित करेगी । इसमें सम्बद्ध विषयों जैसे ट्रेड-यूनियन, किसान और विद्यार्थी संगठनों तथा अन्य जन-आंदोलनों से संबंधित दस्तावेजों का संकलन किया जाएगा । इसमें साम्यवादी आंदोलन के अंतर्राष्ट्रीय पहलू पर भी ध्यान दिया जाएगा ।
समय अवधि	२ वर्ष
मंजूर की गई रकम	२५,०००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

परियोजना सं० ७

परियोजना का नाम	गंगा-यमुना दोआब की ऐतिहासिक ऐटलस
परियोजना-निदेशक	प्रोफेसर रोमिला थापर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय-क्षेत्र	इस परियोजना में गंगा-यमुना दोआब की टिप्पणीयुक्त ऐटलस तैयार करने का प्रस्ताव है । यह प्रदेश उत्तर भारत के सांस्कृतिक इतिहास का नाभिकीय क्षेत्र रहा है। इसमें ऐतिहासिक अविच्छिन्नता और परिवर्तन की मुख्य प्रवृत्तियों को दिखलाने का प्रयत्न किया जाएगा इसमें नीचे लिखी बातों पर विचार किया जाएगा : १. प्रागैतिहासिक और आद्य ऐतिहासिक स्थल २. ऐतिहासिक काल में इन स्थलों का बने रहना ३. जनपदों का विस्तार और परवर्ती काल में उनका राजनीतिक राज्यों और प्रशासनिक यूनिटों के रूप में बने रहना ४. व्यापार के मार्ग और वाणिज्यिक केन्द्र ५. प्रवास के मार्ग ६. धार्मिक केन्द्र और उनका उपयोग करने वाले मत और संप्रदाय ७. प्रशासन केन्द्र ८. भाषाई क्षेत्र ९. प्रौद्योगिकियों का वितरण
समय अवधि	३ वर्ष
मंजूर की गई रकम	२५,०००.०० रु०
दी गई रकम	४,२५०.०० रु०

परियोजना सं० ८

परियोजना का नाम	शिला लेखों का संकलन और प्रकाशन
परियोजना निदेशक	प्रोफेसर डी० सी० सरकार ६४५, न्यू अलीपुर रोड, कलकत्ता-५३

परियोजना का स्वरूप और उसका विषय-क्षेत्र	ऐसा प्रतीत होता है कि इस परियोजना के अंतर्गत ईसवी सन् ६०० से १२०० तक के काल के महत्वपूर्ण भारतीय शिलालेखों का संपादन किया जाएगा।
समय अवधि	———
मंजूर की गई रकम	५,०००.०० रु०
दी गई रकम	५,०००.०० रु०

परियोजना सं० ६

परियोजना का नाम	उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में मालाबार में हुए सामाजिक परिवर्तन
परियोजना निदेशक	डाक्टर के० एन० पनिक्कर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	इस परियोजना में पूर्ववर्ती मद्रास प्रेसीडेन्सी के मालाबार जिले में उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में हुए परिवर्तनों का वर्णन करने और उनकी व्याख्या करने का प्रयत्न किया गया है। इसमें नीचे दिये विषयों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा : १. अठ्ठारहवीं सदी के अंत में केरल की सामाजिक संरचना २. आर्थिक संगठन और राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यवाहियों का स्वरूप ३. एक नये वर्ग का आविर्भाव और उसके द्वारा उत्पन्न संघर्ष तथा मतभेद ४. शहरीकरण और सामाजिक गतिशीलता ५. संपत्ति की स्थिति का स्वरूप ६. सामाजिक संरचना में परिवर्तन यह परियोजना इस बात की जांच करेगी कि मालाबार में मोपला-विद्रोह का कारण अंग्रेजों द्वारा लागू किये गये पट्टे संबंधी परिवर्तन थे जिनके परिणामस्वरूप भूस्वामी वर्ग और कृषक वर्ग के बीच विरोध पैदा हुआ।
समय अवधि	२ वर्ष

मंजूर की गई रकम	१०,०००.०० रु०
दी गई रकम	३,०००.०० रु०

परियोजना सं० १०

परियोजना का नाम	नगरीय इतिहास परियोजना : मुगल और अंग्रेजी शासन के अधीन सूरत का अध्ययन, १६००-१९००
परियोजना निदेशक	प्रोफेसर एस० सी० मिश्रा अध्यक्ष इतिहास विभाग एम० एस० विश्वविद्यालय, बड़ौदा
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय-क्षेत्र	अकबर के शासन काल से ही सूरत मुगलों के प्रमुख नागरीय केन्द्रों में से एक था। इस तरह के नगरीय केन्द्र के सूक्ष्म अध्ययन से उन राजनीतिक और आर्थिक कार्यकलापों का पता चलेगा जो इस तरह के नगरीय केन्द्रों में हुआ करते थे। यह अध्ययन सैद्धांतिक रूप से नगर और उसके अपने वातावरण के बीच के संबंध तथा उक्त नगर में उपलब्ध व्यवसाय के अवसरों के संदर्भ में उक्त नगर के विकास के स्वरूप का अध्ययन करने का प्रयत्न है। यह परियोजना उन सत्ताधारी और वाणिज्यिक समूहों की संरचना तथा अविच्छिन्नता का अध्ययन करेगी, जो कि नगर की सरकार के प्रमुख संघटक थे। इसमें उपर्युक्त अवधि के व्यावसायिक समुदाय और नगरीकरण के इतिहास पर विशेष बल दिया जाएगा।
समय अवधि	१ वर्ष
मंजूर की गई रकम	१०,०००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं।

परियोजना सं० ११

परियोजना का नाम	इंदापुर गांव (अठारहवीं सदी) का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास

परियोजना निदेशक	प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी इतिहास विभाग, पूना विश्वविद्यालय, पूना
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय-क्षेत्र	पूना के हस्तांतरण कार्यालय में इन्दापुर गांव के संबंध में सत्रहवीं सदी के करीब से लेकर अंग्रेजी शासन काल तक का बहुत बड़ी मात्रा में रिकार्ड उपलब्ध हैं। इस अवधि के दौरान इस गांव के राजनीतिक जीवन में अनेक उलटफेर हुए, जिसके फलस्वरूप ग्रामीण समुदायों के सामाजिक और आर्थिक जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा। इस क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक जीवन के अध्ययन से अन्य क्षेत्रों में हुए इसी तरह के परिवर्तनों पर भी प्रकाश पड़ेगा।
समय अवधि	२ वर्ष
मंजूर की गई रकम	१५,०००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

परियोजना सं० १२

परियोजना का नाम	बंगाल में हुए राजनीतिक आंदोलनों की पुस्तक
परियोजना निदेशक	श्री ए० सी० गुहा, ५, गुरुद्वारा रकाबगंज रोड, नई दिल्ली
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	यह पुस्तक बंगाल में हुए राजनीतिक आंदोलनों के संबंध में है और इसका आधार व्यक्तिगत स्मृति है। इसका संबंध सन् १९२१ से १९४६ तक की अवधि से है।
समय अवधि	१ वर्ष
मंजूर की गई रकम	९,०००.०० रु०
दी गई रकम	३,७५०.०० रु०

परियोजना सं० १३

परियोजना का नाम	दक्षिण भारत के ३०० ईसवी से लेकर ९०० ईसवी तक के सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन
परियोजना निदेशक	प्रोफेसर टी० वी० महालिंगम भारतीय इतिहास और पुरातत्व के निवृत्ति प्राप्त प्रोफेसर मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	यह परियोजना पल्लवों के इतिहास के लिए स्रोत सामग्री तैयार करने की दिशा में अपना ध्यान केन्द्रित करेगी । इसमें ईसवी सन् ९०० तक के दक्षिण भारत के सामाजिक सांस्कृतिक इतिहास के मूल स्रोत निहित होंगे. जोकि समस्त उपलब्ध पुरातात्विक, पुरालेखीय, मुद्राशास्त्रीय और साहित्यिक सामग्री में से संग्रहीत किये जाएंगे । साहित्यिक सामग्री में तमिल, कन्नड़ और तेलुगु में उपलब्ध स्रोत भी शामिल हैं । स्रोत सामग्री का तीन श्रेणियों में वर्गीकरण किया जाएगा : १. धर्म और धार्मिक संस्थान २. सामाजिक संगठन ३. आर्थिक परिस्थितियां और संस्थाएं
समय अवधि	२ वर्ष
मंजूर की गई रकम	२६,०००.०० रु०
दी गई रकम	४,०००.०० रु०

परियोजना सं० १४

परियोजना का नाम	गुजरात की उन्नीसवीं सदी की संस्कृति
परियोजना निदेशक	डाक्टर बी० के० चावडा, इतिहास विभाग, एम० एस० विश्वविद्यालय, बड़ौदा

परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	उन्नीसवीं सदी तक के 'गुजरात के इतिहास एवं संस्कृति' के अध्ययन तक सीमित इस परियोजना के अध्ययन का व्यापक महत्व होगा, क्योंकि उन्नीसवीं सदी के पुनर्जागरण के प्रमुख लक्षणों में अंतर्क्षेत्रीय समानता थी। इस परियोजना में व्याख्याकार वर्ग (दुभाषिया) का विशेष अध्ययन किया जाएगा, जिनकी संस्कृति के माध्यम से अंग्रेजी साम्राज्यवाद भारत के भीतरी प्रदेशों में फैला।
समय अवधि	२ वर्ष
मंजूर की गई रकम	१४,०००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

परियोजन सं० १५

परियोजना का नाम	हिन्दुओं की धार्मिक परम्पराओं के सामाजिक आयाम: उत्तरी भारत (७०० ईसवी से १२०० ईसवी तक) के आयतनों और मूर्तियों का अध्ययन
परियोजना निदेशक	: डाक्टर एल० के० त्रिपाठी, रीडर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	इस परियोजना में मध्य प्रदेश और राजस्थान में स्थित हिन्दू देवी देवताओं की प्राचीन मूर्तियों की व्यापक जांच के जरिए हिन्दू धर्म का अध्ययन करने का प्रस्ताव है। इस में इस बात की जांच परख की जाएगी कि इन मूर्तियों से धार्मिक मतों और परम्पराओं में हुए आंदोलनों का किस सीमा तक पता चलता है।
समय अवधि	२ वर्ष
मंजूर की गई रकम	१६,०००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

परियोजना सं० १६

परियोजना का नाम	औरंगजेब आलमगीर के शासन काल के मुगल दस्तावेजों के वर्णनात्मक सूचीपत्र का प्रकाशन
परियोजना निदेशक	डाक्टर सरोजिनी रेगानी निदेशक, राज्य अभिलेखागार टरनाका हैदराबाद, आंध्र प्रदेश
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	जिन दस्तावेजों की सूची बनायी जानी है उनका एतिहासिक मूल्य बहुत अधिक है और वे सत्रहवीं सदी के दौरान दक्षिण भारत की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालेंगे । औरंगजेब के शासन काल के दस्तावेजों की पूरी सूची तैयार करने की दिशा में अभी तक कोई प्रयत्न नहीं किया गया है । ये दस्तावेज फारसी भाषा में शिकाश्त लिपि में लिखे गये हैं, जो कि दक्षिण के मध्यकाल के उत्तरवर्ती वर्षों की विशेषता थी । आंध्र प्रदेश के राज्य अभिलेखागार में संग्रहीत रेकार्ड ईसवी सन् १६५० में सम्राट औरंगजेब के शासनकाल के प्रथम वर्ष से आरंभ होते हैं और इसवी सन् १७०० में उसकी मृत्यु के साथ समाप्त होते हैं ।
समय अवधि	२ वर्ष
मंजूर की गई रकम	२३,०००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

परियोजना सं० १७

परियोजना का नाम	जोधपुर राज्य की ख्यात : उसका आलोचनात्मक संस्करण और ईसवी सन् १७२४ तक का तुलनात्मक अध्ययन

परियोजना निदेशक	डाक्टर रघुवीर सिंह, सीतामऊ (मालवा)
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय-क्षेत्र	इस परियोजना का लक्ष्य 'जोधपुर राज्य की ख्यात' नामक ग्रंथ का आलोचनात्मक संस्करण प्रकाशित करना और इस प्रकार अनुसंधान-छात्रों को बहुमूल्य स्रोत सामग्री उपलब्ध कराना है ।
समय अवधि	१½ वर्ष
मंजूर की गई रकम	२०,६००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

परियोजना सं० १८

परियोजना का नाम	अजमेर मारवाड़ के पूर्वकालीन ठिकानों के ऐतिहासिक रेकार्डों का सर्वेक्षण व संपादन और रेकार्डों की माइक्रोफिल्म तैयार करना
परियोजना निदेशक	डाक्टर वी० एस० भार्गव, अजमेर, मारवाड़
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	ठिकानों के पूर्वकालीन शासकों के ऐतिहासिक रेकार्ड बेतरतीब ढंग से रखे गये हैं । उन्हें वैज्ञानिक पद्धति से वर्गीकृत या सूचीवद्ध नहीं किया गया है । अधिकांशत: ये रेकार्ड मारवाड़ी भाषा में और महाजनी लिपि में लिखे गये हैं और पत्र-व्यवहार, फर्मानों, निशानों आदि की प्रतियां फारसी में भी उपलब्ध हैं । इन सभी कागजातों का संपादन किया जायेगा और यदि जरूरी हुआ तो उनका अनुवाद अंग्रेजी और हिंदी में किया जाएगा । मसूदा और बिलारा ये दो ठिकाने चुने गये हैं ।
समय अवधि	१ वर्ष
मंजूर की गई रकम	१८,८५०.०० रु०
दी गई रकम	९,६००.०० रु०

परियोजना सं० १९

परियोजना का नाम	सत्रहवीं और अठारहवीं सदी के सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास के चुनिंदा दस्तावेजों का प्रकाशन
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय-क्षेत्र	इस परियोजना में राजकीय अभिलेखागार, बीकानेर संग्रहीत दस्तावेजों की जांच-पड़ताल की जाएगी । हालांकि उसमें संग्रहीत दस्तावेज १७ वीं और १८ वीं सदी के राजस्थान से संबंध रखते हैं फिर भी उनसे हमें उक्त अवधि के दौरान भारत के ग्राम समाज में सक्रिय आर्थिक प्रवृत्तियों को समझने में सहायता मिलती है ।
समय अवधि	२ वर्ष
मंजूर की गई रकम	२३,०००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

ऐतिहासिक कृतियों के प्रकाशन के लिए आर्थिक सहायता

३.०६. परिषद ने ऐतिहासिक अध्ययनों के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता देने की एक योजना तैयार की है । ये अध्ययन नीचे दी गई श्रेणियों में वर्गीकृत किये जा सकते हैं :

(i) डाक्टरेट के लिए लिख गये शोध प्रबन्ध ।

(ii) भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त अनुसंधान परियोजनाएं

(iii) वे अन्य अनुसंधान संबंधी अध्ययन/निबंध या स्रोत सामग्री जिन्हें भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त नहीं हुई है

(iv) आलोचनात्मक संपादत/अनूदित स्रोत सामग्री

(v) पत्रिकाएं

(vi) विज्ञानीय और प्रलेखन कार्य, पत्रिकाओं के विशेषांक और अन्य विशेष प्रकाशन

३.०७. अनुसंधान परियोजना संबंधी प्रस्तावों के समान ही परिषद् इन श्रेणियों के अंतर्गत प्राप्त हुई पांडुलिपियों को विशेषज्ञों की राय जानने के लिए उनके पास भेज

देती है और अनुमोदन के लिए अनुसंधान परियोजना समिति के सामने पेश करने से पहले जिन मामलों में जरूरी होता है उनमें संशोधन करने के लिए सुझाव दिया जाता है ।

३.०८. ५,०००.०० रु० की सीमा तक या उत्पादन की लागत के ७५ प्रतिशत तक, इनमें से जो भी कम हो उतनी सहायता दी जाती है ।

३.०९. रिपोर्ट वर्षों के दौरान २१ पांडुलिपियां आर्थिक सहायता देने के लिए स्वीकार की गई थीं और इस काम के लिए १६,३५०.०० रु० की रकम दी गई थी ।

३.१०. आर्थिक सहायता देने के लिए नीचे लिखे प्रकाशनों का अनुमोदन किया गया :

पांडुलिपियां

क्रम सं०	लेखक का नाम	शीर्षक
१.	डाक्टर एच० एन० अग्रवाल	दि एडमिनिस्ट्रेटिव सिस्टम ऑफ नेपाल १९०१—१९६०
२.	डाक्टर एस० सी० भट्टाचार्या	सम आस्पेक्ट्स आफ इंडियन सोसाइटी फ्रांम सी सेकंड सेंचुरी बी० सी० टु फोर्थ संचुरी ए० डी०
३.	डाक्टर सी० एल० चक्रवर्ती	दि हिस्टोरिकल जिऑग्रफी आफ उदियज और उत्तरपथ
४.	डाक्टर बी० डी० चट्टोपाध्याय	क्वाइन्स एण्ड करेंसी सिस्टम इन दि अर्ली साउथ इंडिया सी २२५ ए डी टु १३०० ए डी
५.	डाक्टर सुशील चौधरी	ट्रेड एण्ड कर्मशियल आर्गेनाइजेशन्स इन बेंगाल विद स्पेशल रेफरेंस टू दि इंगलिश ईस्ट इंडिया कंपनी १६५०-१७२०
६.	प्रोफेसर आर० एन० दांडेकर	वैदिक बिबिलिओग्राफी वॉल्यूम ३ (प्रकाशित)

७.	डाक्टर सुरेंद्र गोपाल	कामर्स एण्ड क्राफ्ट्स इन गुजरात (सिकटीन्थ एण्ड सेवेंटीन्थ सेंचुरीज़)
८.	डाक्टर रसेश जमींदार	हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ गुजरात ऑफ दि फर्स्ट फोर सेंचुरीज़
९.	डाक्टर सी० के० अब्दुल करीम	केरल अण्डर हैदरअली एण्ड टीपू सुलतान (प्रकाशित)
१०.	डाक्टर एन० एन० खेर	अग्रेरियन एण्ड फिस्कल एकॉनॉमी इन दि मौर्यन एण्ड पोस्ट मौर्यन एज (प्रकाशित)
११.	डाक्टर जे० पी० मिश्र	दि ऐमिनिस्ट्रेशन आफ इंडिया अण्डर लॉर्ड लैंसडाउन (१८८४-१८९४)
१२.	डाक्टर आर० एन० नंदी	रिलीजियस इंस्टिट्यूशंस एण्ड कल्ट्स इन दि डैक्कन ६००-१००० ए० डी० (प्रकाशित)
१३.	डाक्टर के० के० सेनगुप्ता	दि पबना डिस्टर्बेन्सेज (१८७२-७३) एण्ड दि रेंट क्वश्चन इन बेंगाल
१४.	डाक्टर आर० एल० शुक्ल	ब्रिटेन इंडिया एण्ड दि टर्किश एम्पायर १८५३-१८८२ (प्रकाशित)
१५.	डाक्टर बी० के० सिंह	दि अर्ली चालुक्याज ऑफ बाटापी
१६.	डाक्टर आर० बी० पी० सिंह	जैनिज़म इन अर्ली मेडीवल कर्नाटक
१७.	डाक्टर जे० वान ट्रॉय	सोशल स्ट्रक्चर एण्ड बैकग्राउण्ड ऑफ ब्राह्मिनिकल रिलीजियस मूवमेंटस एण्ड ट्रेडीशन्स ऑफ दि अर्ली मिडिल एजेज (ए० डी० ६००-१२००)

पत्रिकाएँ

१. बंगाल पास्ट एण्ड प्रेजेन्ट
कलकत्ता हिस्टोरिकल सोसाइटी (ऐतिहासिक समिति) कलकत्ता

२. जर्नल आफ एन्सियेन्ट इंडियन सोसाइटी
कलकत्ता

३. जर्नल ऑफ इंडियन हिस्ट्री
त्रिवेंद्रम

४. प्रोसीडिंग्स ऑफ इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस

अध्येतावृति योजना

३.११. परिषद् ने अनुसंधान को प्रोत्साहन देने के लिए विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और अन्य संस्थाओं के छात्रों को अध्येतावृत्तियां देने के संबंध में एक तीसरी योजना बनाई । यह योजना सामान्यत: उन छात्रों के लिए है जो डाक्टरेट उपरांत विषयों पर कार्य कर रहे हैं और जो शिक्षा संस्थाओं में मौजूद है ।

३.१२. आमतौर पर अनुसंधान अध्येतावृत्ति की समय अवधि २ वर्ष है ।

३.१३. अध्येतावृत्ति प्रदान करने से संबंधित नौ प्रस्तावों का अनुमोदन किया गया था और इस कार्य के लिए कुल १९,५६१.०० रु० दिये गये थे ।

३.१४. नीचे उल्लिखित अध्येतावृत्ति प्रस्तावों का अनुमोदन किया गया है :

संख्या १

परियोजना का नाम	'राष्ट्रवाद के सिद्धान्त का विकास : भारत और चीन के बुद्धिजीवियों की भूमिका का तुलनात्मक-अध्ययन (१९१९-१९२९)'
अनुसंधानकर्ता अध्येता	डा. सुरेश शर्मा चीनी और जापानी भाषाओं के अध्ययन का विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	इस परियोजना में राष्ट्रवाद के सिद्धान्त के विकास के व्यापक स्वरूप का अध्ययन करने का प्रस्ताव है जो कि भारत और चीन के बौद्धिक और राजनीतिक विकासों को समझने के लिए उपयोगी रूपरेखा प्रदान करता है । इस परियोजना में दोनों ही देशों के, जिन्हें कि उपनिवेशवाद का अनुभव रहा है, बौद्धिक इतिहास का अध्ययन करने का भी प्रस्ताव है ।

समय अवधि	१ वर्ष
मंजूर की गई रकम	६,०००.०० रु० और आकस्मिकता-अनुदान २,०००.०० रु०
दी गई रकम	५,०००.०० रु०

संख्या २

परियोजना का नाम	'उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के दौरान मालाबार में हुए सिविल उपद्रव'
अनुसंधानकर्ता अध्येता	डाक्टर ए० पी० अब्दुर्रहिमान प्राध्यापक, फारुक कालेज, कालीकट
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	इस परियोजना का संबंध मालाबार क्षेत्र के लोक-प्रशासन, समाज और अर्थ व्यवस्था के इतिहास से है । सम्प्रदाय के विभिन्न वर्गों की मौजूदा व्यवस्था उन परिस्थितियों का परिणाम है जो १९वीं सदी से लेकर २० वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों तक मौजूद थी । इस परियोजना में १८३६ और १८४९ के राजद्रोहों और १८९४ और १८९६ के विद्रोहों का गहराई से अध्ययन किया जाएगा और उनके सामाजिक एवं आर्थिक परिणामों की जांच की जाएगी ।
समय अवधि	१ वर्ष
संजूर की गई रकम	५,०००.०० रु०
दी गई रकम	२,८७५.०० रु०

संख्या ३

परियोजना का नाम	दिल्ली के सल्तनती स्थापत्य कला का विश्लेषणात्मक अध्ययन––उसकी प्रविधियां, प्रतिमान और संकल्पनाएं
अनुसंधानकर्ता अध्येता	डाक्टर आर० नाथ प्राध्यापक, आगरा महाविद्यालय आगरा
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	इस परियोजना में दिल्ली के मुगल पूर्व स्मारकों और उनकी स्थापत्य कला के विकास का अध्ययन करने का विचार है । इसमें ईसवी सन् ११९२ से लेकर

	१५४५ तक की अवधि पर विचार किया गया है। इस अध्येतावृत्ति परियोजना को २ वर्ष के लिए स्थगित कर दिया गया है और इस परियोजना को उक्त अवधि के बाद ही हाथ में लिया जाएगा।
समय अवधि	२ वर्ष
मंजूर की गई रकम	६८१.०० रु० प्रति माह तथा आकस्मिक अनुदान ३,०००.०० रु०
दी गई रकम	५,५८६.०० रु०

संख्या ४

परियोजना का नाम	'गैर पूंजीवादी मार्ग की संकल्पना : मार्क्सवादी सिद्धान्त की समस्याएं'
अनुसंधानकर्ता अध्येता	श्री दीप्तेन्द्र मोहन बनर्जी बर्दमान विश्वविद्यालय बर्दमान
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	इस परियोजना में नीचे लिखे कार्य करने का प्रयत्न किया जाएगा : (।) चुने हुए प्रस्तावों पर १९वीं और २०वीं सदी के उत्तरार्द्ध के साहित्य की विस्तृत ग्रंथसूची तैयार करना, (।।) जर्मन भाषा में रचित मार्क्स एवं एंजेल की रचनाओं के प्रकाश में प्रस्तावों की आलोचनाओं की जांच करना; और (।।।) अंत में ऐतिहासिक वर्गीकरण के कठोर सिद्धान्तों के अनुसार प्रस्तावों को ऐसे रूप में स्वीकार करना जो कि अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों और सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करने वाले अन्य विद्यार्थियों के लिए बोधगम्य हो
समय अवधि	२ वर्ष
मंजूर की गई रकम	९५५.०० प्रति माह तथा आकस्मिक अनुदान के रूप में २,५००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

संख्या ५

परियोजना का नाम	'फ्रेंकॉइस मार्टिन के फ्रांसीसी भाषा में प्रकाशित संस्मरणों का अनुवाद'
अनुसंधानकर्ता अध्येता	डाक्टर लतिका बरदराजन, सोफिया कालेज बंबई विश्वविद्यालय बंबई
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	यह डाक्टरेट उपरांत अध्येतावृत्ति परियोजना है । इसमें फ्रैंकॉइस मार्टिन के संस्मरणों का टीका सहित अनुवाद तैयार किया जाएगा । इसमें सन् १६७० से १६९६ और १७०१ से १७०३ तक के काल को शामिल किया जाएगा ।
समय अवधि	२ वर्ष
मंजूर की गई रकम	७५४.३५ रु० प्रति माह तथा आकस्मिकता अनुदान के रूप में २,५००.०० रु०
दी गई रकम	५,०००.०० रु०

संख्या ६

परियोजना का नाम	'राष्ट्रत्व प्राप्ति के लिए सिंगापुर द्वारा किया गया संघर्ष'
अनुसंधानकर्ता अध्येता	श्रीशिव प्रसाद तिवारी, स्कूल आफ इंटर्नेशनल स्टडीज़, ३५, फीरोजशाह रोड, नई दिल्ली
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	इस परियोजना में उन बेजोड़ समस्याओं का अध्ययन करने का प्रस्ताव है जिनका सिंगापुर को अपनी भौगोलिक स्थिति और अपनी जनसंख्या के कारण सामना करना पड़ा । इस परियोजना में विभिन्न मोर्चों पर सिंगापुर सरकार की कार्य-प्रणाली की जांच की जाएगी और सन् १९६५ से १९७१ तक की अवधि के दौरान सरकार की सफलताओं का मूल्यांकन किया जाएगा ।
समय अवधि	६ महीने
मंजूर की गई रकम	३००.०० रु० प्रति माह तथा आकस्मिक अनुदान के रूप में ५००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

संख्या ७

परियोजना का नाम	'तेल्लीचेरी में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा किये गये बंदोबस्त का इतिहास'
अनुसंधानकर्ता अध्येता	श्री के० के० एन० कुरुप प्राध्यापक, इतिहास विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय कालीकट
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय-क्षेत्र	इस परियोजना का संबंध १७वीं और १८वीं सदी में तेल्लीचेरी कारखाने के बहुमुखी कार्य का अध्ययन करना है ।
समय अवधि	२ वर्ष
मंजूर की गई रकम	६२२.०० रु० प्रति माह
दी गई रकम	कुछ नहीं

संख्या ८

परियोजना का नाम	'राजस्थान की जनानी ड्योढ़ी का स्वरूप, संगठन और उसकी भूमिका, १७५०-१८५०'
अनुसंधानकर्ता अध्येता	कुमारी सुमन खन्ना डी-२, टाइप ४ क्वार्टर मीरदर्द लेन नई दिल्ली
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय क्षेत्र	इस प्रस्ताव में राजपूत घरानों की मर्दानी ड्योढ़ी और जनानी ड्योढ़ी के महत्वपूर्ण लक्षणों का अध्ययन करने का प्रयास है । इसमें मर्दानी ड्योढ़ी और जनानी ड्योढ़ी के एक दूसरे पर प्रभावों का अध्ययन करने का प्रस्ताव है ।
समय का अवधि	६ महीने
मंजूर की गई रकम	३००.०० रु० प्रति माह तथा आकस्मिक अनुदान के रूप में १,०००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

संख्या ९

परियोजना का नाम	'उड़ीसा का भूमि-संबंधी इतिहास १८०३-१८३३'
अनुसंधानकर्ता अध्येता	डाक्टर बी० एस० दास इतिहास विभाग सम्बलपुर विश्वविद्यालय सम्बलपुर
परियोजना का स्वरूप और उसका विषय-क्षेत्र	इस प्रस्ताव में मूल स्रोतों के प्रयोग से १८०३ से १८३३ के दौरान उड़ीसा की भूमि-संबंधी अर्थव्यवस्था का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया जाना है। उक्त मूल-स्रोतों में से वे सभी स्रोत शामिल हैं जो उड़ीसा के राजकुमारों के अभिलेखागारों और समकालीन उड़िया साहित्य में उपलब्ध हैं।
मंजूर की गई रकम	३,२००.०० रु०
दी गई रकम	कुछ नहीं

इतिहासकारों के व्यावसायिक संगठनों और विश्वविद्यालयों को सहायता

३.१५. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद ने एक और योजना भी तैयार की है जिसके अंतर्गत वह राष्ट्रीय क्षेत्रीय स्तर पर कार्य कर रहे इतिहासकारों के अनुमोदित व्यावसायिक संगठनों की ऐतिहासिक महत्व के विषयों पर विचार-गोष्ठियों, वर्कशाप, परिसंवाद और सम्मेलनों का आयोजन करने में मदद देने के लिए अनुदान दे सकती है। इस योजना के अंतर्गत केवल वे ही व्यावसायिक संगठन सहायता पाने के पात्र होंगे जो पिछले पांच साल से अस्तित्व में हैं। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक संगठन को दिये जाने वाले अधिकतम अनुदान का निर्धारण प्रत्येक मामले की पात्रता पर निर्भर करता है और आमतौर पर यह अनुदान १०,०००.०० रु० सालाना से अधिक नहीं होता है।

३.१६. इस योजना के अंतर्गत भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् ने ११,०००.०० रु० तक की वित्तीय सहायता प्रदान की।

प्रलेखन केन्द्र तथा पुस्तकालय

३.१७. पहली सितंबर १९७२ को यह निर्णय लिया गया था कि एक प्रलेखन-केन्द्र तथा पुस्तकालय की स्थापना की जाए। यह प्रलेखन-केन्द्र कला, साहित्य, संगीत धर्म, दर्शन आदि के इतिहास को शामिल करते हुए अपने व्यापक अर्थ के अंतर्गत इतिहास की सभी शाखाओं को समाविष्ट कर लेगा। इस केन्द्र का भारत और विदेशों में

स्थित इसी किस्म की अन्य संस्थाओं के साथ घनिष्ठ संपर्क होगा । आंकड़ों का संग्रह मानकीकृत फार्मों में किया जाएगा ताकि अंतर्राष्ट्रीय एकरूपता कायम रखी जा सके ।

३.१८. इसके कार्यों के अंतर्गत अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं दोनों में, सन् १९४७ से प्रकाशित और अप्रकाशित शोध-प्रबंधों, लेखों और अन्य प्रकाशित सामग्रियों की सूची बनाना और सार तैयार करना शामिल है ।

३.१९. प्रलेखन-केन्द्र की स्थापना के लिए शिक्षा और समाज-कल्याण मंत्रालय ने वर्ष १९७२-७३ के दौरान ५,०००.०० रु० की सांकेतिक व्यवस्था की ।

अध्याय ४

विशेष परियोजनाएँ

४.०१. इस रिपोर्ट-वर्ष के दौरान भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् ने शिक्षा और समाज-कल्याण के केन्द्रीय मंत्रालय द्वारा उसे सौंपी गयी नीचे लिखी परियोजनाओं को हाथ में लेने के लिए अपनी सहमति दी है :

(i) स्वाधीनता संग्राम में केन्द्रीय और राज्य-विधान-मण्डलों की भूमिका
(ii) भारत की स्वाधीनता के लिए भारत के बाहर, विदेशों में, किये गये क्रांतिकारी कार्यकलाप (१९०५-४७)
(iii) मध्य एशियाई सभ्यता का अध्ययन
(iv) द्वितीय विश्व-युद्ध का इतिहास
(v) भारतीय और एशियाई सभ्यताओं से संबंधित स्रोत-ग्रंथ
(vi) स्वतंत्रता की ओर

(i) स्वाधीनता संग्राम में केंद्रीय और राज्य विधान-मंडलों की भूमिका

४.०२. भारतीय स्वतंत्रता की २५वीं वर्षगांठ के अवसर पर परिषद से स्वतंत्रता-संग्राम में केन्द्रीय और राज्य (प्रांतीय) विधान-मण्डलों की भूमिका से सम्बन्धित ग्रंथमाला तैयार करने का निवेदन किया गया। इस परियोजना की देखरेख करने के लिए प्रोफेसर एस० गोपाल की अध्यक्षता में एक सम्पादक मण्डल का गठन किया गया था।

४.०३. इस ग्रंथमाला के अंतर्गत डाक्टर मनोरंजन झा द्वारा लिखी गई पहली पुस्तक **'स्वाधीनता-संग्राम में केंद्रीय विधान-मंडल की भूमिका'** का विमोचन भारत के राष्ट्रपति द्वारा १५ अगस्त, १९७२ को किया गया था।

४.०४. 'स्वतंत्रता संग्राम में राज्य विधान-मण्डलों की भूमिका' पर ग्यारह प्रांतों को समाविष्ट करने वाले ग्यारह खंडों के लेखन की योजना डाक्टर मनोरंजन झा के संचालन में तैयार की गई थी और यह कार्य नीचे लिखे विद्वानों को सौंपा गया था :

असम	डाक्टर अमलेन्दु गुहा
बंगाल	श्री गौतम चट्टोपाध्याय

बिहार	डाक्टर मनोरंजन झा
बंबई	डाक्टर पी० बी० रानाडे
केन्द्रीय प्रान्त और बरार	डाक्टर के० एन० सिन्हा
मद्रास	डाक्टर एस० कृष्णास्वामी
उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रदेश	डाक्टर जेड० ए० निजामी, डाक्टर ए० के० गुप्ता
उड़ीसा	डाक्टर के० एम० पात्र
पंजाब	डाक्टर श्रीमती सत्याराय
सिंध	डाक्टर ए० के० गुप्ता
	डाक्टर जेड० ए० निजामी
उत्तरप्रदेश	डाक्टर के० सी० श्रीवास्तव

(ii) भारत की स्वाधीनता के लिए भारत के बाहर किए गए क्रांतिकारी कार्य-कलाप (१९०५-१९४७)

४.०५. इस विषय पर स्रोत सामग्री के दो खंड तैयार करने की योजना थी। पहले खंड के संकलन का काम (१९०५-२७) प्रोफेसर ए० सी० बोस को सौंपा गया था और उनकी मदद के लिए डाक्टर ए० पी० शर्मा को नियुक्त किया गया था। दूसरे खण्ड पर भी (१९२७-४७) काम आरंभ कर दिया गया था।

(iii) मध्य एशियाई सभ्यता का अध्ययन

४.०६. यूनेस्को ने मध्य एशिया वासियों की सभ्यताओं को, उनके पुरातत्व, इतिहास, विज्ञान और साहित्य के अध्ययन के जरिए, बेहतर ढंग से समझने के लिए एक परि-योजना शुरू की है। उसका एक अंश विचार और दर्शन के इतिहास से संबंध रखता है।

४.०७. नीचे लिखे अन्य सात अध्ययनों की योजना बनाई गई है :

मध्यकालीन अवधि में मध्य एशिया वासियों का एक दूसरे पर सांस्कृतिक प्रभाव	प्रोफेसर के० ए० निजामी सेंटर आफ एडवांस्ड स्टडी इन हिस्ट्री अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
कुषाण कालीन पुरातत्व पर सटिप्पण ग्रंथ-सूची तैयार करना	डाक्टर बी० एन० पुरी लखनऊ विश्वविद्यालय
कुषाण कालीन देवी-देवताओं से लेकर मुगल काल तक की कला और स्थापत्य कला में प्रयुक्त कथानक-रूढ़ियां, प्रतीक, मिथक और आख्यान	प्रोफेसर जी० आर० शर्मा इलाहाबाद विश्वविद्यालय

भारतीय अभिलेखागार के मध्य एशिया से संबंधित पांडुलिपियों और दस्तावेजों के वर्णनात्मक-सूचीपत्र तैयार करना	एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता
मध्य एशिया के सामाजिक और राजनीतिक विचारों का इतिहास	अनेक विद्वान
कुषाणों के इतिहास और पुरातत्व पर एक ग्रंथ का प्रकाशन	अनेक विद्वान
भारत में गांधर्व मूर्ति-कला का सूचीपत्र मथुरा की खुदाई	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, नई दिल्ली

४.०८. कुषाणों के इतिहास और पुरातत्व विषयक खंड में लेख देने वालों का एक सम्मेलन १२ फरवरी १९७३ को हुआ और उसमें उन्होंने अध्यायों की रूपरेखा, समय-अनुसूची और अन्य ब्यौरों को अंतिम रूप दिया। यह निर्णय लिया गया कि इस खंड में कुषाण इतिहास और कुषाण-इतिहास लेख स्रोतों की प्रस्तावना संबंधी अध्याय सहित लगभग ४०० पृष्ठ होंगे।

(iv) द्वितीय विश्व-युद्ध का इतिहास

४.०९. भारत द्वितीय विश्वयुद्ध के इतिहास के लेखन के लिए अप्रैल-मई १९६७ में गठित अंतर्राष्ट्रीय समिति का सदस्य है। इसके गठन का उद्देश्य विश्व-युद्ध के विभिन्न पहलुओं से संबंधित ऐतिहासिक अनुसंधान को आगे बढ़ाना है। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् से द्वितीय विश्व-युद्ध के इतिहास के संबंध में एक राष्ट्रीय सलाहकार समिति का गठन करने के लिए कहा गया था। नीचे लिखी समिति का गठन किया गया है :

अध्यक्ष, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्	डाक्टर बी० के० वासु निदेशक, इतिहास प्रभाग विदेश मंत्रालय नई दिल्ली
प्रोफेसर ए० सी० बोस अध्यक्ष इतिहास विभाग जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू	प्रोफेसर सतीश चन्द्र इतिहास के प्रोफेसर जवाहरलाल विश्वविद्यालय और उपाध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई-दिल्ली

प्रोफेसर बरुण डे निदेशक सेंटर फार स्टडीज़ इन सोशल सांइसेज कलकत्ता	प्रोफेसर एस० गोपाल इतिहास के प्रोफेसर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय और अध्यक्ष नेशनल बुक ट्रस्ट नई-दिल्ली
डाक्टर के० के० घोष जादवपुर विश्वविद्यालय कलकत्ता	डाक्टर एस० मुखर्जी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली
डाक्टर के० एन० पाण्डेय निदेशक इतिहास प्रभाग रक्षा-मंत्रालय नई-दिल्ली	मेजर जनरल परांजपे सैनिक इतिहास विभाग पूना विश्वविद्यालय पूना
डाक्टर एस० एन० प्रसाद निदेशक भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली	कर्नल रामाराव रक्षा अध्ययन विश्लेषण संस्थान नई दिल्ली
डाक्टर आर० एल० शुक्ला इतिहास विभाग पटना विश्वविद्यालय पटना	प्रोफेसर हीरालाल सिंह अध्यक्ष इतिहास विभाग बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी
प्रोफेसर एम० एस० वेंकटरमनी स्कूल आफ इंटरनेशनल स्टडीज जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली	सचिव भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली

४.१०. समिति ने नीचे लिखे क्षेत्रों में अध्ययन करने की सिफारिश की :

(i) भारतीय अर्थ-व्यवस्था पर द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव

(ii) भारतीय समाज पर द्वितीय विश्व-युद्ध का प्रभाव

(iii) राष्ट्रवादी और लोकप्रिय आंदोलनों पर द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव, और

(iv) बाहरी दुनिया के साथ भारत के संबंधों पर द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव

४.११. इन क्षेत्रों के अध्ययन करने वाले अनुसंधान-छात्रों को अध्येतावृत्ति प्रदान करने का निर्णय लिया गया और विश्वविद्यालयों तथा अनुसंधान-संस्थाओं से अपने प्रस्ताव विचारार्थ परिषद् के पास भेजने के लिए कहा गया ।

४.१२. द्वितीय विश्वयुद्ध संबंधी अंतर्राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर हेनरी माइकेल फरवरी १९७३ में भारत आये और उन्होंने द्वितीय विश्व-युद्ध के इतिहास के बारे में फ्रांसीसी समिति के साथ सहयोग करने की संभावना के बारे में राष्ट्रीय सलाहकार समिति के स्थानीय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया ।

(v) भारतीय और एशियाई सभ्यताओं से संबंधित स्रोत ग्रंथ

४.१३. भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान (इंडियन इंस्टिट्यूट आफ एडवांस स्टडी), शिमला के परामर्श से परिषद् भारतीय और एशियाई सभ्यताओं के संबंध में स्रोत ग्रंथ तैयार करने के लिए सहमत हुई । भारतीय संस्कृति का स्रोत ग्रंथ तैयार करने का काम प्रोफेसर नीहार रंजन रे के निदेशन में शुरू किया गया ।

(vi) स्वतंत्रता की ओर

४.१४. यह योजना बनाई गई है कि १९३७ से १९४७ के बीच हुए स्वातंत्र्य-आंदोलन से संबंधित स्रोत-सामग्री पर लगभग छह वर्षों में १० खंडों की एक ग्रंथमाला प्रकाशित की जाए । ये ग्रंथ सरकारी और निजी दस्तावेजों, समाचार पत्रों और अन्य समकालीन स्रोतों पर आधारित होंगे और उनमें राष्ट्रीय आंदोलन के सामाजिक और आर्थिक आयाम पर भी चर्चा की जाएगी ।

४.१५. इस कार्य के लिए नीचे उल्लिखित संपादक-मण्डल का गठन किया गया था :

प्रोफेसर आर० एस० शर्मा	प्रोफेसर बी० शेख अली
प्रोफेसर सतीश चन्द्र	प्रोफेसर एस० गोपाल
प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी	प्रोफेसर एस० आर० मेहरोत्रा
डाक्टर एस० एन० प्रसाद	प्रोफेसर अमलेस त्रिपाठी

मुख्य संपादक (नियुक्त किया जाना है)

अध्याय ५

अन्य कार्यकलाप

विदेश स्थित स्वतंत्रता सेनानियों पर प्रदर्शनी

५.०१. भारतीय स्वतंत्रता रजत-जयंती के अवसर पर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् ने शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय का यह सुझाव स्वीकार किया कि विदेश स्थित स्वतंत्रता सेनानियों पर एक प्रदर्शनी आयोजित की जाए। यह काम इस रिपोर्ट अवधि में शुरू किया गया ।

राष्ट्रीय नेताओं की दीर्घा

५.०२. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् ने राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा (नेशनल गैलरी आफ माडर्न आर्ट) के सहयोग से भारतीय स्वतंत्रता की पच्चीसवीं वर्षगांठ के समारोह के अंग के रूप में दिल्ली में राष्ट्रीय नेताओं की एक दीर्घा स्थापित करने में भारत सरकार की सहाता करने के लिए अपनी सहमति दी । उसने राष्ट्रीय नेताओं के जीवनी संबंधी रेखाचित्रों की व्यस्था की और 'आधुनिक भारत के निर्माता' शीर्षक से एक लघु खंड प्रकाशित करने की योजना बनाई ।

इतिहासकारों की विचार-गोष्ठियाँ

५.०३. मैसूर में २ से ४ मार्च तक प्रोफेसर बी. शेख अली के निदेशन में 'भारतीय इतिहास की आधुनिक प्रवृत्तियां' नामक एक विचार-गोष्ठी आयोजित की गई । इसका उद्घाटन मैसूर विश्वविद्यालय के उपकुलपति द्वारा किया गया था । पचास से अधिक इतिहासकारों ने उसमें भाग लिया जिनमें से अधिकांश दक्षिण भारतीय विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों से आये थे । इस अवसर पर भारतीय अनुसंधान के संभावित क्षेत्रों के बारे में विचार-विमर्श किया गया ।

साहित्य का आदान-प्रदान

५.०४. विदेशों की ऐतिहासिक समितियों के साथ संपर्क स्थापित करने के विनीत उपाय के रूप में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् ने भारत में लिखित पुस्तकों का एक सेट अफगानिस्तान की ऐतिहासिक और साहित्यिक समिति के पास भेजने

की व्यवस्था की। प्रतिदान में उक्त समिति ने परिषद् के पास अपना प्रकाशन, अरियाना (Ariana) भेजा।

अन्तर्राष्ट्रीय विचार-गोष्ठी-सम्मेलन

५.०५. परिषद् ने भारतीय इतिहास कांग्रेस के सचिव प्रोफेसर सतीशचन्द्र और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् के सदस्य, की यूगोस्लाविया यात्रा का आयोजन किया। उन्होंने २१ और २२ जुलाई, १९७२ को हारीग लेवी में ऐतिहासिक विज्ञानों की अंतर्राष्ट्रीय समिति की तैयारी समिति की बैठक में भाग लिया, जिसमें १९७५ में सेन फ्रेंसिस्को में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन की विषय-वस्तुओं को अंतिम रूप दिया गया था।

५.०६. ईराकी इतिहास और पुरातत्व समिति ने नीचे लिखे विषयों पर विचार-विमर्श के लिए बगदाद में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया :

फिलस्तीन और यहूदीवादी योजनाएं

अरब उपसागर और साम्राज्यवादी कार्य कलाप

अरबी संस्कृति और सभ्यता के वे सुनिश्चित मूलतत्व जो कि आधुनिक अरब पुनर्जागरण में अपनाये जा सकते हैं

वर्तमान अरब राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की विशेषताएं

५.०७. परिषद् की ओर से अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के पश्चिम एशियाई अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष प्रोफेसर मकबूल अहमद ने और जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, के पश्चिम एशियाई और अफ्रीका अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष प्रोफेसर एम० एस० अगवानी ने सम्मेलन में भाग लिया और अरबी इतिहास संबंधी वर्तमान अनुसंधान के बारे में अरब के और अन्य स्थानों के विद्वानों के साथ विचार विनिमय किया।

भारत-सोवियत परिसंवाद

५.०८. भारत और संयुक्त समाजवादी सोवियत रूस के बीच सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् ने '१७ वीं सदी से १९ वीं सदी के प्रथमार्द्ध तक के काल में भारत और रूस में हुए आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन' पर एक द्विपक्षीय सोवियत परिसंवाद का आयोजन करने के लिए सोवियत नेशनल कमेटी आफ हिस्टोरियन्स और इंस्टिट्यूट आफ ओरिएन्टल स्टडीज तथा यू० एस० एस० आर० अकेडमी आफ साइंसेज के साथ पत्र व्यवहार किया। परिषद् ने

परिसंवाद में भाग लेने के लिए नीचे उल्लिखित सात इतिहासकारों के एक प्रतिनिधिमंडल का चयन किया :

प्रोफेसर सतीश चन्द्र

प्रोफेसर वरुण डे

डाक्टर सुरेन्द्र गोपाल

डाक्टर अमलेन्दु गुहा

प्रोफेसर तपन राय चौधरी

प्रोफेसर आर० एस० शर्मा

प्रोफेसर अमलेश त्रिपाठी

ढाका विश्वविद्यालय के प्रो० ए० बी० एम० हबीबुल्ला का आगमन

५.०९. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् ने ढाका विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और इस्लामी इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर ए० बी० एम० हबीबुल्ला को विभिन्न विश्वविद्यालयों का दौरा करने और ऐतिहासिक महत्व के स्रोतों का अध्ययन करने के लिए एक माह के लिए आमंत्रित किया था। उन्होंने मुजफ्फरपुर में हुए भारतीय इतिहास कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया और पटना, जामियामिलिया, अलीगढ़, इलाहाबाद, बम्बई, बनारस और उत्कल विश्वविद्यालयों के इतिहास-विभागों का दौरा किया। उन्होंने पणजी (गोवा) में हुई भारतीय इतिहास अभिलेख आयोग की बैठक में भी भाग लिया।

परिषद् के प्रकाशन

५.१०. नीचे लिखे प्रकाशन निकाले गये :

पुस्तकें

रोल आफ दि सेंट्रल लेजिसलेचर इन दी फ्रीडम स्ट्रगल—लेखक डा० मनोरंजन झा

आर्थिक सहायता प्राप्त प्रकाशन

ब्रिटिश-इंडिया एण्ड दि टरकिश एम्पायर (१८५३-१८८२)—लेखक डाक्टर आर० एल० शुक्ला

विवरणिका

रूल्स फार पब्लिकेशन ग्रांट्स (प्रकाशन अनुदान की नियमावली)

रूल्स फार ग्रांट्स इन एड फॉर रिसर्च प्रोजेक्ट्स	(अनुसंधान परियोजनाओं के लिए सहायक-अनुदान की नियमावली)
स्कीम ऑफ फैलोशिप ऑफ दि आई सी एच आर	(भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् की अध्येतावृत्ति योजना)

वृत्त पत्र :

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् का वृत्तपत्र (आई० सी० एच० आर० न्यूज़लेटर) सं० १ खण्ड १

अध्याय ६

प्रशासन और वित्त

कर्मचारी वर्ग

६.०१. प्रशासन व लेखा अधिकारी और कुछ कर्मचारियों की अल्प संख्या से शुरू होकर ३१ मार्च १९७३ को परिषद् के कुल संस्वीकृत कर्मचारी-वर्ग की संख्या ४० थी। (परिशिष्ट ३)

लेखन सामग्री और उपस्कर

६.०२. लेखन सामग्री और सामान की आवश्यक खरीद आरंभ में सुपर बाजार से की गई। वित्त वर्ष के अंत तक, परिषद् के कार्यालय में अपना टेलिफोन, डुप्लीकेटिंग मशीन, ब्राडमा पता लेखी और अन्य प्रकार के उपस्कर थे।

नियम-विनियम

६.०३. कार्यालय की स्थापना के बाद शीघ्र ही, प्रशासन के विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में विनियमों का प्रारूप बनाने का कार्य विनिमय-समिति ने अपने हाथ में लिया। समिति द्वारा बनाए गए विनियमों को परिषद् ने १० जनवरी, १९७३ को अपनी दूसरी बैठक में अनुमोदित किया।

बजट और लेखा

६.०४. इस रिपोर्ट वर्ष के दौरान परिषद् को ४ लाख रुपए का बजट आबंटित किया गया जिसमें से वर्ष के अंत तक ३,९४,३१९.०४ रु० की राशि खर्च की गई। परिषद् के ४ लाख रुपए के अपने बजट के अतिरिक्त भारतीय इतिहास परिषद् को सौंपी गई और जिन्हें परिषद् ने स्वीकार कर लिया था उन विभिन्न विशेष परियोजनाओं के लिए शिक्षा-मंत्रालय ने १२.७१ लाख रुपए की एक और राशि दी परिषद् के वर्ष १९७२-७३ के लेखों की महालेखाकार, केन्द्रीय राजस्व ने नवम्बर १९७३ में लेखा परीक्षा की। प्राप्तियों और अदायगियों का विवरण और देयताओं और परिसम्पत्तियों का विवरण परिशिष्ट-४ में दिया गया है।

अभिस्वीकृतियाँ

६.०५. परिषद् शैक्षिक समाज और भारत सरकार से प्राप्त सहायता और सहयोग के लिए उनके प्रति अपनी कृतज्ञता को अभिलेखबद्ध करना चाहता है। परिषद् के कर्मचारी वर्ग की विशेषतया इस प्रारंभिक अवस्था में की गई सेवाएं भी सराहनीय हैं। परिषद् के सदस्यों और परिषद् में कार्य करने वाले कर्मचारी वर्ग के अथक प्रयत्नों से यह आशा की जाती है कि आने वाले वर्षों में परिषद और अधिक उन्नति करेगा।

परिशिष्ट I

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् के सदस्य

अध्यक्ष
प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

१. प्रोफेसर बी० शेख अली
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
मैसूर विश्वविद्यालय मैसूर

२. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (छुट्टी पर हैं)
तथा
उपाध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

३. प्रोफेसर बरुन डे
निदेशक
सेंटर फार स्टडीज इन सोशल साइंसेज
१०, लेक टैरेस
कलकत्ता-२९

४. प्रोफेसर एस० गोपाल
इतिहास प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
तथा
अध्यक्ष
नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

५. प्रोफेसर बी० एन० गोस्वामी
ललित कला-प्रोफेसर
पंजाब विश्वविद्यालय
चंडीगढ़

६. प्रोफेसर जे० एस० ग्रेवाल
इतिहास के प्रोफेसर
गुरू नानक विश्वविद्यालय
अमृतसर

७. प्रोफेसर इर्फान एम० हबीब
इतिहास के प्रोफेसर
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

८. प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
पूना विश्वविद्यालय
पूना

९. प्रोफेसर सतीश सी० मिश्र
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
एम० एस० विश्वविद्यालय
बड़ौदा

१०. प्रोफेसर के० ए० निजामी
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

११. प्रोफेसर के० राजय्यन
अध्यक्ष, आधुनिक इतिहास विभाग
मदुराई विश्वविद्यालय
मदुराई

१२. प्रोफेसर तपन राय चौधरी
इतिहास के प्रोफेसर
आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
आक्सफोर्ड (यू० के०)

१३. प्रोफेसर एच० डी० सांकलिया
निदेशक,
डक्कन कालेज
पूना

१४. प्रोफेसर जी० आर० शर्मा
अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

१५. प्रोफेसर हीरा लाल सिंह
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

१६. प्रोफेसर डी० सी० सरकार
निदेशक
सेंटर आफ एडवांस्ड स्टडीज इन ऐनशन्ट हिस्ट्री
कलकत्ता

१७. प्रोफेसर रोमिला थापर
अध्यक्ष,
सेंटर फार हिस्टारिकल स्टडीज
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

१८. प्रोफेसर अमलेश त्रिपाठी
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
कलकत्ता विश्वविद्यालय
कलकत्ता

सदस्य (पदेन)

१९. प्रोफेसर एस० नूरुल हसन
शिक्षा व समाज कल्याण मंत्री
नई दिल्ली

२०. श्री टी० पी० सिंह
सचिव
शिक्षा व समाज कल्याण मंत्रालय
नई दिल्ली

२१. श्री एस० नारगोलवाला
संयुक्त सचिव
वित्त मंत्रालय तथा वित्त सलाहकार
शिक्षा व समाज कल्याण मंत्रालय
नई दिल्ली

२२. डा० आर० सी० गुप्त,
संयुक्त सचिव
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

२३. श्री एम० एन० देशपांडे
पुरातत्व महा निदेशक
नई दिल्ली

२४. डा० एस० एन० प्रसाद
निदेशक
भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार
जनपथ, नई दिल्ली

२५. भारत सरकार के प्रतिनिधि रिक्त
सदस्य सचिव रिक्त

परिशिष्ट २

भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्

३५. फीरोजशाह रोड, नई दिल्ली

परिषद की समितियों, उप-समितियों और कार्यकारी ग्रुपों का गठन

प्रशासन समिति

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (छुट्टी पर हैं)
तथा
उपाध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

३. डा० आर० सी० गुप्त
संयुक्त सचिव
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

४. श्री एस० नारगोलवाला
संयुक्त सचिव
वित्त मंत्रालय तथा वित्त सलाहकार
शिक्षा व समाज कल्याण मंत्रालय
नई दिल्ली

५. प्रोफेसर के० ए० निजामी
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

६. डा० एस० एन० प्रसाद
निदेशक
राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली

७. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

अनुसंधान परियोजना समिति

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (छुट्टी पर हैं)
तथा
उपाध्यक्ष
विश्वविद्यालय-अनुदान आयोग
नई दिल्ली

३. प्रोफेसर एस० गोपाल
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
तथा
अध्यक्ष
नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

४. प्रोफेसर अमलेश त्रिपाठी
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

५. परीक्षाधीन अध्ययन क्षेत्रों को
अलग-अलग बैठकों के लिए
तीन विशेषज्ञ सहयोजित करने हैं
इन्हें अध्यक्ष नामित करेंगे ।

६. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

विनियम समिति

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (छुट्टी पर हैं)
तथा
उपाध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

३. प्रोफेसर बरुन डे
सेंटर फार स्टडीज इन सोशल साइंसेज
कलकत्ता

४. डा० एस० एन० प्रसाद
निदेशक
भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार
नई दिल्ली

५. प्रोफेसर तपन राय चौधरी
इतिहास के प्रोफेसर
आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
आक्सफोर्ड (यू० के०)

६. श्री जे० वीरराघवन
निदेशक (पी० व आई० एफ०)
शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

७. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

सर्वेक्षण समिति

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर एस० शेख अली
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
मैसूर विश्वविद्यालय
मैसूर

३. प्रोफेसर बरुन डे
निदेशक
सेंटर फार स्टडीज इन सोशल साइंसेज
१०, लेक टैरेस
कलकत्ता-२९

४. प्रोफेसर बी० एन० गोस्वामी
ललित कला प्रोफेसर
पंजाब विश्वविद्यालय
चंडीगढ़

५. प्रोफेसर इर्फान हबीब
इतिहास के प्रोफेसर
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

६. डा० एस० एन० प्रसाद
निदेशक
भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार
नई दिल्ली

७. प्रोफेसर के० राजय्यन
अध्यक्ष, आधुनिक इतिहास विभाग
मदुराई विश्वविद्यालय
मदुराई

८. प्रोफेसर एच० डी० संकलिया
निदेशक
डक्कन कालेज
पूना

९. प्रोफेसर हीरा लाल सिंह
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
वाराणसी

१०. प्रोफेसर डी० सी० सरकार
निदेशक
सेंटर फार एडवांस स्टडीज इन ऐनशन्ट हिस्ट्री
कलकत्ता

११. प्रोफेसर रोमीला थापर
अध्यक्ष
सेंटर फार हिस्टोरीकल स्टडीज
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

१२. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

पुस्तकालय और प्रलेखन समिति

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर जे० एस० ग्रेवाल
इतिहास के प्रोफेसर
गुरु नानक विश्वविद्यालय
अमृतसर

३. प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
पूना विश्वविद्यालय
पूना

४. प्रोफेसर सतीश सी० मिश्र
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
एम० एस० विश्वविद्यालय
बड़ौदा

५. डा० एस० एन० प्रसाद
निदेशक
भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार
नई दिल्ली

८. प्रोफेसर तपन राय चौधरी
इतिहास के प्रोफेसर
आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
आक्सफोर्ड (यू० के०)

७. प्रोफेसर जी० आर० शर्मा
अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

८. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

स्रोत-समिति (प्राचीन भारत का इतिहास)

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर एच० डी० सांकलिया
निदेशक
डक्कन कालेज पूना

३. प्रोफेसर जी० आर० शर्मा
अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

४. प्रोफेसर डी० सी० सरकार
निदेशक
सेंटर आफ एडवांस्ड स्टडीज इन ऐनशन्ट हिस्ट्री
कलकत्ता

५. प्रोफेसर रोमीला थापर
अध्यक्ष
सेंटर फार हिस्टारिकल स्टडीज
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

६. श्री एम० एन० देशपाण्डे
पुरातत्व महा निदेशक
नई दिल्ली

७. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए स्रोत उप-समिति (प्राचीन भारत का इतिहास

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर लल्लनजी गोपाल
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
वाराणसी

३. डा० डी० एन० झा
इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना

४. डा० एम० जी० एस० नारायण
कालीकट विश्वविद्यालय
कालीकट

५. डा० ए० एम० शास्त्री
इतिहास विभाग
नागपुर विश्वविद्यालय नागपुर

६. प्रोफेसर रोमीला थापर
अध्यक्ष
सेंटर फार हिस्ट्रारीकल स्टडीज
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

७. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

शिलालेख उप-समिति

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

२. डा० पी० बी० देसाई
कर्नाटक विश्वविद्यालय
धारवाड़ (मैसूर)

३. डा० जी० एस० घई
मुख्य पुरालेखवेत्ता
मैसूर

४. प्रोफेसर टी० वी० महालिंगम
निवृत प्रोफेसर
मद्रास विश्वविद्यालय
मद्रास

५. डा० एम० जी० एस० नारायणन
कालीकट विश्वविद्यालय
कालीकट

६ डा० ए० एम० शास्त्री
नागपुर विश्वविद्यालय
नागपुर

७. डा० डी० सी० सरकार
निदेशक
सेंटर आफ एडवांस्ड स्टडीज इन ऐनशन्ट हिस्ट्री
कलकत्ता

८. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

स्रोत समिति (मध्यकालीन भारत का इतिहास)

१. प्रोफेसर एस० नूरुल हसन
शिक्षा, समाज-कल्याण व संस्कृति मंत्री
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

३. डा० क्यामुद्दीन अहमद (सहयोजित सदस्य)
इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय
पटना

४. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (छुट्टी पर हैं)
तथा
उपाध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

५. प्रोफेसर बी० एन० गोस्वामी
ललित कला प्रोफेसर
पंजाब विश्वविद्यालय
चंडीगढ़

६. प्रोफेसर जे० एस० ग्रेवाल
इतिहास के प्रोफेसर
गुरु नानक विश्वविद्यालय अमृतसर

७. प्रोफेसर इर्फान एम० हबीब
इतिहास के प्रोफेसर
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

८. प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी
अध्यक्ष
इतिहास विभाग
पूना विश्वविद्यालय पूना

९. प्रोफेसर सतीश सी० मिश्र
अध्यक्ष,
इतिहास विभाग
एम० एस० विश्वविद्यालय
बड़ौदा

१०. प्रोफेसर के० ए० निजामी
अध्यक्ष,
इतिहास विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

११. प्रोफेसर तपन राय चौधरी
इतिहास के प्रोफेसर
आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
आक्सफोर्ड (यू० के०)

१२. डा० बी० पी० सक्सेना (सहयोजित सदस्य)
३५, चेतम लाइन्स
इलाहाबाद

१३. डा० रघुबीर सिंह (सहयोजित सदस्य)
रघुवीर निवास
सीतामऊ (मध्य प्रदेश)

१४. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली।

यूरोपीय स्रोत-उपसमिति (मध्यकालीन भारत का इतिहास)

१. डा० जार्ज मोरेस
निदेशक
इन्स्टीट्यूट आफ हिस्टारिकल रिसर्च
९, न्यू मैरीन लाइन्स
बम्बई

२. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (छुट्टी पर हैं)
तथा
उपाध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

३. डा० सुरेन्द्र गोपाल
इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय
पटना

४. प्रोफेसर अशिन दास गुप्ता
अध्यक्ष,
इतिहास विभाग
विश्वभारती विश्वविद्यालय
शांतिनिकेतन

५. डा० ओम प्रकाश
दिल्ली स्कूल आफ इकनामिक्स
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

६. डा० अनिरुद्ध रे
कलकत्ता विश्वविद्यालय
कलकत्ता

७. प्रोफेसर तपन राय चौधरी
इतिहास के प्रोफेसर
आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
आक्सफोर्ड (यू० के०)

८. डा० एन० पी० वर्मा
इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय
पटना

९. सचिव,
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

पुर्तगाली स्रोत समिति (मध्यकालीन भारत का इतिहास)

१. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (छुट्टी पर हैं)
तथा
उपाध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

२. डा० एस० देसाई
कोल्हापुर विश्वविद्यालय
कोल्हापुर

३. डा० बी० टी० गुना
निदेशक
गोवा अभिलेखागार
पंजिम

४. प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
पूना विश्वविद्यालय पूना

५. प्रोफेसर जार्ज मोरेस
निदेशक
इंस्टीट्यूट आफ हिस्टारीकल रिसर्च
९, न्यू मैरीन लाइन्स
लिबर्टी सिनेमा के सामने
बम्बई

६. श्री ए० जी० पवार
उपकुलपति
कोल्हापुर विश्वविद्यालय
कोल्हापुर

७. सचिव,
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

स्रोत-समिति (आधुनिक भारत का इतिहास)

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर बी० शेख अली
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
मैसूर विश्वविद्यालय
मैसूर

३. प्रोफेसर बिपन चन्द्र
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

४. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (छुट्टी पर हैं)
तथा
उपाध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

५. प्रोफेसर बरुन डे
निदेशक
सेंटर फार स्टडीज इन सोशल साइंसेज
१०, लेक टैरेस
कलकत्ता-२९

६. प्रोफेसर एस० गोपाल
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

तथा
अध्यक्ष
नेशनल बुक ट्रस्ट
नई दिल्ली

७. डा० एस० एन० प्रसाद
निदेशक
भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार
जनपथ
नई दिल्ली

८. प्रोफेसर के० राजाय्यन
अध्यक्ष,
आधुनिक इतिहास विभाग
मदुराई विश्वविद्यालय
मदुराई

९. प्रोफेसर तपन राय चौधरी
इतिहास के प्रोफेसर
आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
आक्सफोर्ड

१०. प्रोफेसर हीरा लाल सिंह
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
वाराणसी

११. प्रोफेसर अमलेश त्रिपाठी
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
कलकत्ता विश्वविद्यालय
कलकत्ता

१२. सचिव,
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली

राष्ट्रवादी आन्दोलन उप-समिति (आधुनिक भारत का इतिहास)

१. प्रोफेसर एस० गोपाल
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
तथा
अध्यक्ष
नेशनल बुक ट्रस्ट
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर ए० आर० देसाई
अध्यक्ष, समाज शास्त्र विभाग
बम्बई विश्वविद्यालय
बम्बई

३. डा० एम० झा
निदेशक
राज्य विधायी एकक
आई० आई० पी० ए० छात्रावास भवन
इन्द्र प्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-१

४. प्रोफेसर बिमल प्रसाद
स्कूल आफ इन्टरनेशनल स्टडीज
३५, फिरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली

५. डा० एस० एन० प्रसाद
निदेशक
राष्ट्रीय अभिलेखागार
जनपथ नई दिल्ली-१

६. डा० के० राजाय्यन
अध्यक्ष, आधुनिक इतिहास विभाग
मदुराई विश्वविद्यालय
मदुराई

७. प्रोफेसर टी० के० रविन्द्रन
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
केरल विश्वविद्यालय
त्रिवेन्द्रम

८. प्रोफेसर सुमित सरकार
२३६।ए, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस मार्ग,
कलकत्ता-४७

९. प्रोफेसर हीरा लाल सिंह
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

१०. श्री जगदीश शर्मा
पुस्तकाध्यक्ष
पंजाब विश्वविद्यालय
चंडीगढ़

११. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

आर्थिक आधार सामग्री और सांख्यिकी उपसमिति (१८२३-१९४७)
(आधुनिक भारत का इतिहास)

१. प्रोफेसर अमलेश त्रिपाठी
फ्लैट २५, ब्लाक ३
२८/१ए, गरिहाट मार्ग
कलकत्ता

२. डा० अमीय बागची
अध्यक्ष, सेंटर फार इकनामिक स्टडीज
प्रेसिडेन्सी कालेज
कलकत्ता

३. डा० एस० भट्टाचार्य
सह प्रोफेसर
सेंटर आफ हिस्टारीकल स्टडीज़
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

४. प्रोफेसर बिपन चन्द्र
सेंटर आफ हिस्टारिकल स्टडीज़
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

६. श्री आर० डी० चोकसे
उप-प्रधानाचार्य
नौरसजी वाडिया कालेज
पूना

६. डा० शमूर कुमार
दिल्ली स्कूल आफ इकनामिक्स
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

७. श्री सौरीन राय
एच ८६, कनाट सर्कस
नई दिल्ली

८. डा० वी० बी० सिंह
अर्थशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ-७

९. डा० आर० एल० शुक्ल
रीडर
इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय
पटना

१०. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

भारतीय सभ्यता पर स्रोत पुस्तक तैयार करने से संबधित योजना ग्रुप

१. डा० क्यामुद्दीन अहमद
पटना विश्वविद्यालय
पटना

२. प्रोफेसर बिपन चन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

३. डा० बी० डी० चट्टोपाध्याय
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

४. डा० डी० पी० चट्टोपाध्याय
३, शंभूनाथ पंडित स्ट्रीट
१०, लेक टेरेस
कलकत्ता-२०

५. प्रोफेसर ब्रून डे
निदेशक
सेंटर फार स्टडीज इन सोशल साइंसेज
कलकत्ता

६. प्रोफेसर जे० एस० ग्रेवाल
गुरु नानक विश्वविद्यालय
अमृतसर

७. डा० (श्रीमती) सुवीरा जायसवाल
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

८. प्रोफेसर सतीश सी० मिश्र
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
एम० एस० विश्वविद्यालय
बड़ौदा

९. प्रोफेसर के० ए० निजामी
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

१०. डा० प्रदीप सिन्हा
कलकत्ता विश्वविद्यालय
कलकत्ता

पुनर्मुद्रण उप-समिति (प्राचीन भारत का इतिहास)

१. डा० आर० चम्पकलक्ष्मी
सेंटर फार हिस्टारीकल स्टडीज
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

२. डा० डी० एन० झा
इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय
पटना

३. डा० अमिता रे
कलकत्ता विश्वविद्यालय
कलकत्ता

४. श्री हितेश रंजन सान्याल
कलकत्ता विश्वविद्यालय
कलकत्ता

५. डा० एस० सेत्तर
कर्नाटक विश्वविद्यालय
धारवाड़ (मैसूर)

६. डा० बी० एन० एस० यादव
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

७. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली

पुनर्मुद्रण उप-समिति (आधुनिक भारत का इतिहास)

१. प्रोफेसर बरुन डे
निदेशक
सेंटर फार स्टडीज इन सोशल साइंसेज
१० लेक टैरेस
कलकत्ता

२. प्रोफेसर बी० शेख अली
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
मैसूर विश्वविद्यालय
मैसूर

३. श्री इक्तिदर आलम खां
रीडर, इतिहास विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

४. प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
पूना विश्वविद्यालय
पूना

५. प्रोफेसर फौजा सिंह
प्रोफेसर और निदेशक
इतिहास अध्ययन विभाग
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

६. सचिव
इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

मध्य एशियाई अध्ययन के परियोजना निदेशकों की समिति

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
उपाध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

३. श्री एम० एन० देशपाण्डे
महा-निदेशक
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग
नई दिल्ली

४. श्री एस० के० मित्रा
एशियाई सोसाइटी
कलकत्ता

५. प्रोफेसर के० ए० निजामी
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

६. डा० बी० एन० पुरी
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

७. प्रोफेसर जी० आर० शर्मा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

८. श्री वी० के० थापर
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग
नई दिल्ली

९. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

द्वितीय विश्व-युद्ध के इतिहास से सम्बन्धित राष्ट्रीय सलाहकार समिति

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

२. डा० बी० के० वसु
निदेशक
इतिहास प्रभाग
विदेश कार्य मंत्रालय
नई दिल्ली

३. प्रोफेसर ए० सी० बोस
अध्यक्ष
इतिहास विभाग
जम्मू विश्वविद्यालय
जम्मू

४. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (छुट्टी पर हैं)
तथा
उपाध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

५. प्रोफेसर बरुन डे
निदेशक
सेंटर फार स्टडीज इन सोशल साईसेंज
कलकत्ता

६. प्रोफेसर एस० गोपाल
इतिहास के प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
तथा
अध्यक्ष,
नेशनल बुक ट्रस्ट आफ इंडिया
नई दिल्ली

७. डा० के० के० घोष
यादवपुर विश्वविद्यालय
कलकत्ता

८. डा० एस० मुखर्जी
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
न्यू महरौली रोड
नई दिल्ली

९. डा० के० एन० पाण्डे
निदेशक
इतिहास प्रभाग
रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली

१०. मेजर जनरल परांजपे
सैनिक इतिहास विभाग
पूना विश्वविद्यालय, पूना

११. डा० एस० एन० प्रसाद
निदेशक
भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार
जनपथ, नई दिल्ली

१२. कर्नल रामा राव
इंस्टीट्यूट आफ डिफेंस स्टडीज़ अनैलेसिस
सप्रू हाउस
बाराखंभा रोड
नई दिल्ली

१३. डा० आर० एल० शुक्ल
इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय
पटना

१४. प्रोफेसर हीरा लाल सिंह
अध्यक्ष
इतिहास विभाग
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
वाराणसी

१५. प्रोफेसर एम० एस० वेंकटारमनी
डीन,
स्कूल आफ इन्टरनेशनल स्टडीज
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

१६. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

द्वितीय विश्व युद्ध के इतिहास के खंडों की सीरीज तैयार करने के लिए गठित किया गया कार्यकारी ग्रुप

१. डा० एस० एन० प्रसाद
निदेशक
भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार
नई दिल्ली

२. डा० बी० के० बसु
निदेशक,
इतिहास प्रभाग
विदेश कार्य मंत्रालय
नई दिल्ली

३. प्रोफेसर ए० सी० बोस
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
जम्मू विश्वविद्यालय
जम्मू

४. प्रोफेसर बरुन डे
निदेशक
सेंटर फार स्टडीज इन सोशल साइंसेज
कलकत्ता

५. डा० एस० मुखर्जी
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

६. डा० के० एन० पाण्डे
निदेशक
इतिहास प्रभाग
रक्षा मंत्रालय
नई दिल्ली

८. डा० आर० एल० शुक्ल
इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय
पटना

८. सचिव,
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

अनुवाद कार्यक्रम समिति

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
उपाध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

३. प्रोफेसर बरुन डे
निदेशक
सेंटर आफ स्टडीज़ इन सोशल साइंसेज
१०, लेक टैरेस
कलकत्ता

४. प्रोफेसर एस० गोपाल
सेंटर फार हिस्टारिकल स्टडीज
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली
तथा
अध्यक्ष
नेशनल बुक ट्रस्ट आफ इंडिया
नई दिल्ली

५. प्रोफेसर जे० एस० ग्रेवाल
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
गुरुनानक विश्वविद्यालय
अमृतसर

६. प्रोफेसर रोमीला थापर
सेंटर फार हिस्टारीकल स्टडीज
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

७. प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी
अध्यक्ष
इतिहास विभाग
पूना विश्वविद्यालय
पूना

८. सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

पांचवी पंचवर्षीय योजना के लिए भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् का प्रस्ताव बनाने के लिए कार्यकारी ग्रुप

१. प्रोफेसर आर० एस० शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

२. प्रोफेसर सतीश चन्द्र
उपाध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

३. प्रोफेसर जे० एस० ग्रेवाल
इतिहास विभाग
गुरु नानक विश्वविद्यालय
अमृतसर

४. प्रोफेसर इरफान हबीब
इतिहास के प्रोफेसर
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

५. प्रोफेसर ए० आर० कुलकर्णी
इतिहास विभाग
पूना विश्वविद्यालय
पूना

६. प्रोफेसर हीरा लाल सिंह
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
वाराणसी

७. प्रोफेसर रोमीला थापर
सेन्टर फार हिस्टारिकल स्टडीज
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

८. प्रोफेसर अमलेश त्रिपाठी
फ्लैट संख्या २५, ब्लाक ३
२८।ए, गरीहट रोड
कलकत्ता

९. सचिव,
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली

परिशिष्ट III

३१-३-१९७३ तक परिषद् के संस्वीकृत कर्मचारी वर्ग की संख्या

क्रम संख्या	पद की श्रेणी	पद संख्या
१.	सदस्य सचिव	१
२.	प्रशासन व लेखा अधिकारी	१
३.	सम्पादक व परियोजना अधिकारी	१
४.	प्रकाशन अधिकारी	१
५.	अनुसंधान अधिकारी	३
६.	पुस्ताकाध्यक्ष (प्रलेखन केन्द्र में समायोजित किया जाएगा)	१
७.	अध्यक्ष का निजी सचिव	१
८.	अधीक्षक (प्रशासन'	१
९.	अधीक्षक (लेखा)	१
१०.	वरिष्ठ अनुसंधान सहायक	३
११.	रोकड़िया व कनिष्ठ लेखाकार	१
१२.	सहायक	३
१३.	सदस्य सचिव का वैयक्तिक सहायक	१
१४.	पुस्तकालय सहायक	१
१५.	आशुलिपिक (वरिष्ठ)	१
१६.	आशुलिपिक (कनिष्ठ)	१
१७.	उच्च श्रेणी लिपिक	२
१८.	लेखा लिपिक	१
१९.	निम्न श्रेणी लिपिक	६
२०.	गेस्टेटनर प्रचालक	१
२१.	ब्राडमा प्रचालक	१
२२.	चौकीदार	१
२३.	फराश व जमादार	१
२४.	श्रेणी-४	५

परिशिष्ट IV

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् का मार्च, १९७३ को समाप्त हुए वर्ष का प्राप्ति और अदायगी लेखा

प्राप्ति	राशि	राशि	अदायगी	राशि	राशि
(१) १.४.७२ को आदि शेष	—	—	(क) प्रशासन		
(२) भारत सरकार से			१. कर्मचारी वर्ग के		
प्राप्त अनुदान भारतीय इतिहास			वेतन और भत्ते	४९,५८०.४४	
अनुसंधान परिषद्	४,००,०००.००		२. कर्मचारी वर्ग का यात्रा भत्ता	३,२५७.१०	
केन्द्रीय सरकार			३. परिषद् की बैठकों के		
स्वास्थ्य सेवा के			लिए यात्रा भत्ता,		
लिए प्राप्ति	५१.५०		प्रशासन समिति और		
विविध प्राप्ति	१८.००		विनियम समिति	७,२८४.०५	
विशिष्ट परियोजनाओं के लिए			४. इमारत का किराया	९,८६८.४०	
भारत सरकार से			५. अन्य प्रभार	४८,४८४.६२	
प्राप्त अनुदान	१२,७१,०००.००	१६,७१,०६९.५०	६. छुट्टी वेतन और		
			पेंशन अंशदान	५,३०४.६०	
			जोड़, प्रशासन	१,२३,७७९.२१	
			(ख) कार्यक्रम		
			१. सामान्य		
			(i) कर्मचारी वर्ग के		
			वेतन और भत्ते	२२,९७३.००	
			(ii) कर्मचारी वर्ग का		
			यात्रा भत्ता	२,४८०.७५	
			जोड़ सामान्य	२५,४५३.७५	

प्राप्ति	राशि	राशि	अदायगी	राशि	राशि
			२. अनुसंधान परियोजना		
			(i) अनुसंधान परियोजना समिति का यात्रा भत्ता	५,२२७.५७	
			(i) अनुसंधान परियोजनाओं के लिए सहायक अनुदान	४१,०००.००	
			जोड़, अनुसंधान परियोजनाएं	४६,२२३.५७	
			३. अध्येता वृत्तियां		
			(क) भारत में अनुसंधान करने वाले इतिहासकारों को अध्येता-वृत्तियां	१६,५६१.००	
			जोड़, अध्येतावृत्तियां	१६,५६१.००	
			४. ऐतिहासिक प्रकाशनों के लिए सहायक अनुदान		
			(i) प्रकाशन के लिए सहायक अनुदान	१६,३५०.००	
			जोड़, सहायक अनुदान	१६,३५०.००	

प्राप्ति	राशि	राशि	अदायगी	राशि	राशि
			५. इतिहास अनुसंधान का सर्वेक्षण		
			(i) अनुसंधान सर्वेक्षण समिति का यात्रा भत्ता	४,४३७.४५	
			(ii) अनुसंधान सर्वेक्षणों के लिए दिया गया मानदेय	२,०००.००	
			जोड़, इतिहास अनुसंधान का सर्वेक्षण	६,४३७.४५	
			६. स्रोत सामग्री तैयार करना		
			(i) विभिन्न समितियों के सदस्यों का यात्रा-भत्ता	३४,२९४.३५	
			(ii) मानदेय, फीस आदि	१२,८००.००	
			जोड़, स्रोत सामग्री तैयार करना	४७,०९४.३५	
			७. प्रकाशन		
			(i) वृत पत्र	४,३७९.५७	
			जोड़, प्रकाशन	४,३७९.५७	

प्राप्ति	राशि	राशि	अदायगी	राशि	राशि
			घ. इतिहास अनुसंधान के क्षेत्रों में कार्य करने वाले व्यावसायिक संगठनों को सहायता	११,०००.००	
			ङ. विचार-गोष्ठी, परि-संवाद तथा सम्मेलन		
			(i) भाग लेने वालों का यात्रा भत्ता	४२,७०८.५४	
			जोड़, विचार-गोष्ठी परिसंवाद तथा सम्मेलन	४२,७०८.५४	
			पूंजीगत खर्च को छोड़कर, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद को कुल संवि-तरण	३,४२,९८७.४४	
			विशेष परियोजनाएँ		
			१. इतिहास अनुसंधान के क्षेत्र में प्रलेखन केन्द्र		
			(i) समिति की बैठक के लिए यात्रा भत्ता और अन्य प्रभार	४,२८३.६५	
			जोड़	४,२८३.६५	

प्राप्ति	राशि	राशि	अदायगी	राशि	राशि
			II. मध्य एशियाई सभ्यता का अध्ययन		
			(i) वेतन और भत्ते	४९२.८५	
			(ii) समिति की बैठक के लिए यात्रा भत्ता	१,४९९.१५	
				१,९९२.००	
			III. स्वतंत्रता संग्राम में केन्द्रीय और राज्य विधान मंडलों की भूमिका		
			(क) 'रोल आफ सेंट्रल लेजिसलेचर इन फ्रीडम स्ट्रगल' के प्रकाशन पर खर्च	३१,४२४.३८	
			(ख) स्वतंत्रता संग्राम में राज्य विधान मंडल की भूमिका		
			(i) कर्मचारी वर्ग के वेतन और भत्ते (मुख्यालय और यूनिटें)	४७,८१५.००	

प्राप्ति	राशि	राशि	अदायगी	राशि	राशि
			(ii) कर्मचारी वर्ग का और बैठकों का यात्रा भत्ता	१३,०४५.२०	
			(iii) मुद्रण, अनुवाद, आदि सहित अन्य प्रभार	२९५.००	
			जोड़ मुख्यालय और यूनिटें	६१,१५५.२०	
			जोड़: (केन्द्रीय और राज्य विधान मंडल आदि की भूमिका)	९२,५७९.५८	
			द्वितीय विश्वयुद्ध का इतिहास		
			(i) समिति की बैठक के लिए यात्रा भत्ता	७,३८०.००	
			जोड़, (द्वितीय विश्व युद्ध)	७,३८०.००	
			आई० एन० ए० स्रोत		
			(i) वेतन और भत्ते	१,५३६.००	
			(ii) समिति की बैठकों के लिए यात्रा भत्ता	४,२७१.००	
			जोड़, आई एन. ए. स्रोत	५,८०७.००	

प्राप्ति	राशि	राशि	अदायगी	राशि	राशि
			vi विदेश स्थित स्वतंत्रता सेनानियों की दिल्ली में प्रदर्शनी		
			(i) यात्रा भत्ते और अन्य प्रभार	४०,८४१.९५	
			जोड़	४०,८४१.९५	
			vii मूल (कोर) पुस्तक कार्यक्रम के अधीन मूल पुस्तकों की रचना		
			(i) मुख्यालय यूनिटें:		
			(क) अन्य प्रभार	८१३.८०	
			(ii) भारतीय विद्या भवन सीरीज का सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद		
			(क) मुद्रण आदि सहित अन्य प्रभार	२३,५१०.४८	

प्राप्ति	राशि	राशि	अदायगी	राशि	राशि
			पूँजीगत खर्च भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्		
			(i) फर्नीचर और उपस्कर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्	५१,३३१.६०	
			जोड़, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् का कुल पूंजीगत खर्च	५१,३३१.६०	
			जोड़, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् को कुल सवितरण		३,६४,३१६.०४
			विशेष परियोजनाओं पर पूंजीगत खर्च		
			(i) प्रलेखन: पुस्तकें	२६०.६०	
			(ii) **स्वतंत्रता संग्राम में केन्द्रीय और राज्य विधान मंडलों की भूमिका**		
			(i) फर्नीचर और कार्यालय उपस्कर	११,८७५.६०	
			(ii) पुस्तकें	७८७.६५	
				१२,६६३.५५	

प्राप्ति	राशि	राशि	अदायगी	राशि	राशि
			(iii) **अनुवाद परियोजना :**		
			(i) फर्नीचर और कार्या-		
			लय उपस्कर	२५,४५१.७५	
			(ii) पुस्तकें	१३,३४९.००	
			कुल पूंजीगत खर्च	३८,८००.७५	
			जोड़-परियोजनाएं		२,२८,९३३.६६
			जोड़ (संवितरण)	६,२३,२५२.७०	
			अंत शेष		
			रोकड़ शेष	३१,५५९.५६	
			बैंक में रोकड़	१०,१६,२५७.२४	
				१०,४७,८१६.८०	१०,४७,८१६.८०
कुल प्राप्ति	१६,७१,०६९.५०		कुल अदायगी जोड़		१६,७१,०६९.५०

३१.३.१९७३ को समाप्त होने वाले वर्ष का आय-व्यय लेखा

खर्च			आय		
प्रशासन में			**भारत सरकार से प्राप्त अनुदान से**		
कार्यक्रम	१,२३ ७२९.२१		भारतीय अनुसंधान परिषद्	४,००,०००.००	
सामान्य	२५,४५३.७५		विशेष परियोजनाएं	१२,७१,०००.००	
अनुसंधान परियोजनाओं में	४६,२२३.५७		जोड़		१६,७१,०००.००
अध्येता वृत्तियों में	१९,५६१.०७		घटाएं-पूंजीकृत अनुदान		
ऐतिहासिक प्रकाशनों के लिए सहायक अनुदान में	१६,३५०.००		**भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद**		
			फर्नीचर और कार्यालय उपस्कर	५०,२२९.६०	
			विशेष परियोजनाएँ		
इतिहास अनुसंधान में सर्वेक्षण	६,४३७.४५		फर्नीचर और कार्यालय उपस्कर	३७,३२७.६५	
स्रोत सामग्री तैयार करने में	४७,०९४.३५		पुस्तकें	१४.३९७.३५	
प्रकाशन में	४,३७९.५७		जोड़		१,०१,९५४.८०
					१५,६९,०४५.२०
इतिहास अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यावसायिक संगठनों को सहायता	११,०००.००		विविध प्राप्तियों द्वारा		६९.५०
			अगले पृष्ठ पर ले जाया गया		१५,६९,११४.७०
विचार गोष्ठी, परिसंवाद और सम्मेलन में	४२,७०८.५४				
	३,४२,९३७.४४	३,४२,९३७.४४			

खर्च		आय	
पिछला जोड़		३,४२,९३७.४४	१५,६९,११४.७०
इतिहास अनुसंधान के क्षेत्र में प्रलेखन केन्द्र	४,२८३.६५		
मध्य एशियाई सभ्यता का अध्ययन में	१,१९२,००		
स्वतंत्रता संग्राम में केन्द्रीय और राज्य विधान मंडलों की भूमिका में	९२,५७९.५८		
द्वितीय विश्वयुद्ध का इतिहास में	७,३८०.००		
आई. एन ए. स्रोत में	५,८०७.००		
विदेश स्थित स्वतंत्रता सेनानियों की दिल्ली में प्रदर्शनी में	४०,८४१.९५		
मूल कार्यक्रम के अधीन मूल पुस्तकों की रचना भारतीय विद्या भवन सीरीज का सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद	२४,३२४.२८		

खर्च		आय	
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् के खर्च से अधिक	६,९०२.४६		
विशेष परियोजनाएँ	१०,४२,०६६.३४		
		१०,४८,९६८.८०	
		१५,६९,११४.७०	१५,६९,११४.७०

ह०/ एम० आर० लूथरा	ह०/ पी० के० सेन मजूमदार	ह०/ (श्रीमती) एस० दुराई स्वामी
लेखा अधीक्षक	प्रशासन व लेखा अधिकारी	सचिव

वर्ष १९७२-७३ की देयताओं और परिसम्पत्तियों का विवरण

देयताएँ			परिसम्पतियाँ		
पूंजीकृत अनुदानों में			पूंजीगत लेखे द्वारा		
भारतीय इतिहास अनुसंधान			भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद		
परिषद्	५०,२२९.६०		फर्नीचर और कार्यालय		
			उपस्कर	५०,२२९.६०	
परियोजना	५१,७२५.२०		विशेष परियोजनाएं		
		१,०१,९५४.८०	फर्नीचर और कार्यालय		
			उपस्कर	३७,३२७.६५	
खर्च से अधिक आय			जोड़		८७,५५७.२५
भारतीय इतिहास अनुसंधान			परियोजनाएं		
परिषद्	६,९०२.४६		पुस्तकें		१४,३९७.५५
परियोजना	१०,४२,०६६.३४		बकाया राशि द्वारा		
		१०,४८,९६८.८०	मैसर्स रैमिंगटन रैंड से वसूली	१,१०२.००	१,१०२.००
			अंतशेष		
			रोकड़ शेष	३१,५५९.५६	
		११,५०,९२३.६०	बैंक में रोकड़	१०,१६,२५७.२४	
			टिकटें	५०.००	१०,४७,८६६.८०
					११,५०,९२३.६०

ह०/ एम० आर० लूथरा ह०/पी० के० सेन मजूमदार ह०/(श्रीमती) एस० दुराई स्वामी